ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष- 02, 2081 | dopaharmetro | epaper.dopaharmetro.com | dopaharmetro | वर्ष-07, अंक - 353 | पेज 8, मूल्य 2 रुपए

डाक पंजीयन क्रमांकः म.प्र./4-474/2025-26

भोपाल
08 जून 2024 शनिवार

आज का मौसम
39 अधिकतम
28 न्यूनतम

बेबाक खबर हर दोपहर

दोपहर मेट्रो

Page- 7

कैबिनेट गठन की मशक्कत भी जारी, सहयोगियों के साथ फार्मूले की तलाश

कल शाम पीएम की शपथ की तैयारी, कांग्रेस कार्यसमिति चुन रही अपना नेता

मोदी के बाद अब दूसरा नेता चुनने की कवायद, राहुल की नई पारी

कांग्रेस सांसदों का दिल्ली में जमावड़ा

लोकसभा चुनाव परिणाम के बाद आज दिल्ली में कांग्रेस के सभी सांसदों का जुटान है। दिल्ली में संसदीय दल व कांग्रेस कार्यसमिति की भी दिल्ली में बैठक हो रही है। इसमें तमाम नवनिर्वाचित सांसद हिस्सा ले रहे हैं। राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे सीडब्ल्यूसी की बैठक में शामिल होने के लिए पहुंचे तो कई सांसद हाथों मं राहुल को नेता प्रतिपक्ष बनाए जाने के बोर्ड लिये नजर आये। अधिकांश सांसद चाहते हैं कि इस बार राहुल यह जिम्मेदारी निभाएं। दरअसल सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी होने के नाते कांग्रेस नेता को सदन में आधिकारिक तौर पर नेता प्रतिपक्ष का दर्जा मिलेगा। कांग्रेस ने इस चुनाव में 99 सीटें जीती हैं और नेता प्रतिपक्ष बनने के लिए सबसे बड़े विपक्षी दल के पास कम से कम कुल सीटों की संख्या 10 प्रतिशत यानी 55 सीट होनी चाहिए।

नई दिल्ली,दोपहर मेट्रो,एजेंसी।

भाजपा-एनडीए द्वारा संसदीय दल का नेता चुन लेने के बाद आज कांग्रेस संसदीय दल अपने नेता का चुनाव कर रहा है। इसमें राहुल गांधी के चुने जाने और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष बनने की संभावना ज्यादा है। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में आगे की रणनीति पर भी चर्चा हो रही है। उधर नरेंद्र मोदी नेता चुने जाने के बाद कल शाम शपथ लेने वाले हैं। इसके लिये व्यापक तैयारियां जारी हैं तथा कई देशों का राष्ट्राध्यक्ष इस समारोह के लिये भारत आ रहे हैं। इसमें श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे; मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू; सेशेल्स के उपराष्ट्रपति अहमद अफीफ; बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हो रहे हैं। ये नेता उसी शाम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा आयोजित भोज में भी शामिल होंगे। वहीं केबिनेट गठन के मामले में अभी स्थिति स्पष्ट नहीं है,क्योंकि नीतीश,चंद्रबाबू नायडू और चिराग पासवान के साथ वह पार्टी भी मंत्रीपद की तलबगार हैं जो आकार में बहुत छोटी हैं। ऐसे में मंत्रीमंडल सहमति न बनने पर गठन दो तीन बाद भी हो सकता है।

इसलिए अहम है पद

सरकार में कई ऐसे पद हैं, जहां पर नेता प्रतिपक्ष की भूमिका बेहद अहम होती है। उदाहरण के लिए सीबीआई डायरेक्टर, सीवीसी, लोकपाल और मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति के लिए बनी कमेटी में पीएम के साथ नेता प्रतिपक्ष भी होते हैं। नेता प्रतिपक्ष (एलओपी) हाउस बिजनेस एडवाइजरी कमेटी का हिस्सा होता है और एक पैनल में कार्य करता है तथा कुछ प्रमुख पदाधिकारियों का चयन करता है।

यदि राहुल न माने तो ?

जानकारों का कहना है कि यदि राहुल गांधी इस दौड़ से खुद को बाहर कर लेते हैं तो नेता प्रतिपक्ष पद के लिए शशि थरूर, मनीष तिवारी और केसी वेणुगोपाल के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा हो सकती है। कांग्रेस संसदीय दल के संविधान के अनुसार, इसकी अध्यक्ष सोनिया गांधी के पास लोकसभा और राज्यसभा में विपक्ष के नेता नियुक्त करने करने या ओपन की अनुमति देने का अधिकार है।

शपथ के गवाह बनेंगे लाभार्थी व कर्मचारी-मजदूर

सूत्रों के मुताबिक सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट पर काम करने वाले मजदूरों, सफाई कर्मियों और ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों को भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ समारोह में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। विकसित भारत के एम्बेसडर के रूप में वंदे भारत और मेट्रो ट्रेनों पर काम करने वाले रेलवे कर्मचारियों और केंद्र सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों को आमंत्रित किया गया है। पीएम मोदी के शपथ ग्रहण को देखते हुए दिल्ली पुलिस ने रविवार से दो दिन तक राष्ट्रीय राजधानी को उड़ान प्रतिबंधित क्षेत्र (नो फ्लाइंग जोन) घोषित किया है। इस दौरान पैराग्लाइडर, पैरा- मोटर्स, हैंग ग्लाइडर, यूएवी, यूएएस, हॉट एयर बलून, माइक्रोलाइट एयरक्राफ्ट और रिमोट से संचालित विमानों की उड़ान पर प्रतिबंध रहेगा।

वंदे भारत पायलट श्रीनी श्रीवास्तव को भी शपथ समारोह का न्यौता मिला है।

अब चुनावी राज्यों पर ध्यान देगी कांग्रेस

कांग्रेस बैठक में अध्यक्ष मल्लिकार्जन खरगे ने कहा कि राहुल गांधी ने संविधान, आर्थिक गैर बराबरी, बेरोजगारी और सामाजिक न्याय और सौहार्द्र जैसे मसलों को जन-जन का मुद्दा बना दिया। लेकिन जहां हम कुछ राज्यों में कांग्रेस पार्टी के अच्छे प्रदर्शन पर खुश हैं, तो वहीं उन राज्यों पर भी खास तौर से गौर करना होगा, जहां कांग्रेस पार्टी की संभावनाओं और अपेक्षाओं के विपरीत परिणाम आए। अब 19. कुछ महीनों में महत्वपूर्ण राज्यों के चुनाव होने है, हमें हर कीमत पर विरोधी दलों को परास्त कर, अपनी सरकार बनानी है। लोग बदलाव चाहते है, हमें उनकी ताक़त बनना होगा।

पीके बोले- ब्रांड मोदी हुआ कमजोर

इधर चुनाव विश्लेषक प्रशांत किशोर ने कहा है कि उनका चुनाव पूर्व का आलकन गलत हुआ है लेकिन उन्होंने कहा कि 'अगर आप सुनें कि हम क्या कह रहे हैं तो यह है कि इस चुनाव में मोदी के पक्ष में कोई अखिल भारतीय अंडरकरंट नहीं है। उनकी व्यक्तिगत लोकप्रियता और ब्रांड मोदी के लिए समर्थन की तीव्रता में कमी आई है।' पीके ने कहा कि ग्रामीण संकट, बेरोजगारी और बढ़ती असमानता एक प्रमुख मुद्दा है जो बड़े पैमाने पर लोगों को चिंतित करता है।

फिल्मसिटी संस्थापक रामोजी राव का निधन

हैदराबाद। ईनाडु और रामोजी फिल्म सिटी के संस्थापक रामोजी राव का आज 87 वर्ष की उम्र में निधन हो गया।

राव का हैदराबाद के स्टार अस्पताल में उपचार चल रहा था। जहां सुबह सुबह 3.45 बजे उन्होंने आखिरी सांस ली। राव के निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक व्यक्त किया है। वहीं तेलंगाना के भाजपा प्रमुख और पार्टी सांसद जी किशन रेड्डी ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि राव का तेलुगु मीडिया और पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान सराहनीय है।

अब आप-कांग्रेस का नया कुरूक्षेत्र

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव खत्म होने के साथ ही आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच नया घमासान नजर आया है। दिल्ली और हरियाणा में आप के निराशानजक प्रदर्शन के बाद आम आदमी पार्टी के नेता कांग्रेस को घेरने में लगे हैं। दो दिन पहले ही दिल्ली सरकार के मंत्री गोपाल राय ने कहा था कि दिल्ली विधानसभा के लिए देशभर में कोई गठबंधन नहीं बना है और हम दिल्ली में अपनी अपनी पूरी ताकत से विधानसभा का चुनाव लड़ेंगे। दिल्ली हरियाणा में आप व कांग्रेस के गठबंधन था लेकिन आप का खाता नहीं खुला। जबकि हरियाणा में कांग्रेस ने पांच सीट जीती हैं। कुरुक्षेत्र सीट आप के खाते में थी यहां हार का ठीकरा अब कांग्रेस नेताओं पर फोडा जा रहा है। आप नेता अनुराग ढांडा ने कहा रणदीप सुरजेवाला और अशोक अरोड़ा पर निशाना साधते हुए उन पर भितरघात करने का शक जताया व कहा कि हरियाणा में आम आदमी पार्टी की भ्रूण हत्या की कोशिश की गई। दरअसल गठबंधन प्रत्याशी सुशील गुप्ता चुनाव में भाजपा के नवीन जिंदल से 29021 वोटों हार गए हैं।

फैक्टी में विस्फोट से तीन लोगों की हुई मौत

नई दिल्ली। राजधानी के नरेला स्थित औद्योगिक फैक्ट्री में आग लगने से तीन लोगों की मौत हो गई, वहीं 6 लोग घायल हो गये हैं। प्रारंभिक जांच से पता चला कि कच्चे मूंग को गैस बर्नर पर भूना गया था। इस दौरान एक पाइपलाइन में गैस रिसाव के कारण आग फैल गई और जिससे कंप्रेसर गर्म हो गया। जिसके परिणामस्वरूप विस्फोट हो गया।

मेट्रो एंकर चंद्रबाबू नायडू की कंपनियों ने 5 दिन में कमाए 800 करोड़ रूपए

पॉलिटिक्स में पॉवर, बाजार में धनवर्षा

हैदराबाद, एजेंसी।

भारतीय राजनीति और शेयर बाजार में पिछले एक सप्ताह से जमकर उथलपुथल चल रही है। दोनों ही क्षेत्रों में उतार-चढाव का दौर है। जानकारों की इस पर निगाहें भी हैं। मगर अब खबर है कि इन गाढे दिनों में भी राजनीति ही नहीं बल्कि शेयर बाजार में टीडीपी के मुखिया चंद्रबाबू नायडू छाए हुए हैं। शेयर बाजार में नायडू से जुड़ी एक कंपनी ने पिछले कुछ दिनों में गजब का रिटर्न दिया है, जिसमें इनकी फैमिली की एक बड़ी हिस्सेदारी है। पिछले पांच दिनों के दौरान इस कंपनी द्वारा शानदार रिटर्न देने के बाद चंद्रबाबू नायडू के फैमिली की संपत्ति में रिकॉर्ड बढ़ोतरी हुई है।

मीडिया रिपोर्टस के मुताबिक टीडीपी मुखिया चंद्रबाबू नायडू की ये कंपनी हेरिटेज फूड्स लिमिटेड है। इस कंपनी की स्थापना 1992 में टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू द्वारा हुई थी, जिसके तीन व्यावसायिक विभाग डेयरी, खुदरा और एग्री हैं। कंपनी की एक्सचेंज फाइलिंग के अनुसार, नायडू के बेटे नारा लोकेश हेरिटेज फूड्स के प्रमोटरों में से एक हैं। बीते 5 दिन में इस स्टॉक ने निवेशकों को 55.79 फीसदी का रिटर्न दिया है। पिछले 1 महीने में यह शेयर 101 प्रतिशत से ज्यादा उछला है। यह स्टॉक हेरिटेज फूड्स लिमिटेड है। आलम यह रहा कि हेरिटेज फूड्स के शेयर कल शुक्रवार को 10 फीसदी के अपर सर्किट के साथ 661.25 रुपये पर बंद हुआ, जो 52 सप्ताह का हाई लेवल भी है। ये शेयर पिछले तीन दिन से अपर सर्किट लगा रहा है। इसके 52 सप्ताह का निचला स्तर 206.60 रुपये प्रति शेयर है। कंपनी का मार्केट कैप कुल 3,956 करोड़ रुपये है।

नायडू के बेटे नारा लोकेश 31 मार्च, 2024 तक करीब 10.82 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ हेरिटेज फूड्स के प्रमोटर हैं। अन्य प्रमोटरों में भुवनेश्वरी नारा और देवांश नारा शामिल हैं, जिनके पास कंपनी में क्रमशः 24.37 फीसदी और 0.06 फीसदी की हिस्सेदारी है. हेरिटेज फूड्स में 0.46 प्रतिशत हिस्सेदारी रखने वाली नारा ब्राह्मणी बहू हैं।

फैमिली ने कमाए 785 करोड़ : हेरिटेज फूड्स के शेयरों में धुआंधार तेजी के कारण नायडू की फैमिली के वेल्थ में तगड़ा इजाफा हुआ है। बीएसई शेयरहोल्डिंग के मुताबिक, मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार चंद्रबाबू नायडू के परिवार की कंपनी में कुल हिस्सेदारी 35.71 प्रतिशत है, जो 3,31,36,005 शेयरों के बराबर है। हर शेयर पिछले पांच दिनों के दौरान 237 रुपये का इजाफा हुआ। ऐसे में कुल लाभ 785 करोड़ रुपये हो गया है।

महाराणा प्रताप जयंती के लिए हुआ तूफानी जनसंपर्क

भोपाल। राजधानी में 9 जून को आयोजित महाराणा प्रताप जन्मोत्सव के लिए विभिन्न क्षेत्रों की हस्तियों को निमंत्रण दिए जा रहे हैं। राजपूत महापंचायत के राष्ट्रीय अध्यक्ष कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर ने क्षत्रिय राजपूत सरदारों के साथ कैबिनेट मंत्री विश्वास कैलाश सारंग, मंत्री कृष्णा गौर, पूर्व विधायक ध्रुव नारायण सिंह, विधायक रामेश्वर शर्मा, विधायक भगवान दास सबनानी, पूर्व सांसद प्रज्ञा ठाकुर समेत कई हस्तियों को आयोजन में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया।

शूटिंग बॉल में नंबर वन

भोपाल। भाभा विश्वविद्यालय के कंप्यूटर एप्लीकेशन में पीजीडीसीए की छात्रा शिवांगी सिकरवार ने राज्य शूटिंग बॉल एसोसिएशन महाराष्ट्र द्वारा आयोजित 42वीं राष्ट्रीय शूटिंग बॉल चैंपियनशिप 2023-24 में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। सीईओ श्रीप्रसाद पिल्लई, रजिस्ट्रार श्याम पाटकर, प्राचार्य डॉ. दीपा बख्शी ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।

मप्र मानव अधिकार आयोग ने भोपाल जिले के आठ मामलों में लिया संज्ञान

प्रदेश में पेस्टिसाइड बैक्टीरिया की जांच के लिए नहीं लैब, मांगा जवाब

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

मप्र मानव अधिकार आयोग ने प्रदेश में पेस्टिसाइड जैसे हानिकारक बैक्टीरिया को जांचने के लिये सरकारी माइक्रोबायोलॉजी लैब नहीं होने के मामले में संज्ञान लिया है। मामले में आयोग ने प्रमुख सचिव, खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्रालय, भोपाल को जांच के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही म.प्र. में फूट सैंपल की सम्पूर्ण जांचे हो सकने की सुविधा उपलब्ध न होने से इस सम्बन्ध में प्रदेश के निवासियों को प्राप्त सुरक्षित खाद्य पदार्थ प्राप्ति के मौलिक एवं मानव अधिकारों के संरक्षण में उत्पन्न हो रही बाधा, अनावश्यक विलंब के निवारण के सम्बन्ध में की गई कार्रवाई का प्रतिवेदन दो माह में मांगा है। आयोग के संज्ञान में आया है कि शहरवासी बाजार के जो खाद्य पदार्थ खा रहे है, वे स्वास्थ्य के लिये कितने सुरक्षित है ? यह पता नहीं कर सकते है। क्योंकि इसको जांचने के लिए माइक्रोबायोलॉजी लैब तक नहीं है। इस कारण शहरवासियों की सेहत एवं स्वास्थ्य खतरे में प? रही है।

जलस्त्रोतों में मिल रहा दूषित पानी, अधीक्षक यंत्री को जांच के निर्देश

भोपाल शहर के वीआईपी रोड़ स्थित गौहर महल के पास बड़ तालाब में सीवेज का दूषित पानी मिलने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार नगर निगम द्वारा शहर के जलस्त्रोंतों में सीवेज के पानी को मिलने से रोकने के लिये कई कार्रवाई की गई हैं, लेकिन इस संबंध में निगम के क्षेत्रीय जिम्मेदारों का कहना है कि क्षेत्र की सीवेज लाइन पीएचई के जिम्मे है। मामले में आयोग ने अधीक्षक यंत्री, पीएचई, भोपाल से मामले की जांच कराकर की गई कार्रवाई का प्रतिवेदन तीन सप्ताह में मांगा है।

इन मामलों में भी लिया संज्ञान

आयोग ने शहर के करोंद में बड़े तालाब की सप्लाई वाले क्षेत्रों में विगत एक माह से मटमैले पानी की सप्लाई होने, कोलार क्षेत्र में स्थित वार्ड न. 82 में सर्वधर्म सी-सेक्टर कॉलोनी में पेयजल की पाइपलाइन में लीकेज होने, कोलार रोड़ स्थित सर्वधर्म पुल के पास सीवेज चैंबर का ढक्कन खुले पड़े होने का मामला सामने आया है। बीच सड़क पर खुले पड़े चैंबर से कभी-भी बड़ी सड़क दुर्घटना होने, हमीदिया अस्पताल में संक्रमित कचरा खाली मैदान में डंप किये जाने, कटारा हिल्स क्षेत्र में ईकोलॉजिकल पार्क के आसपास असामाजिक तत्वों की गतिविधियां होने, सोनागिरी स्थित कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल में आने वाले मरीजों एवं स्टॉफ को पीने का साफ नहीं मिलने सहित अन्य मामलों में संज्ञान लेते हुए संबंधित अधिकारियों को जांच के निर्देश दिए हैं।

भोज विवि करेगा सीईसी और बेसिल के साथ एमओयू, छात्रों को मिलेंगी सुविधाएं

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

मप्र भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय 11 जून को दो महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन संपादित किए जा रहे हैं। पहला समझौता ज्ञापन (सीईसी) शैक्षणिक संचार संघ नई दिल्ली के साथ होगा। इस एमओयू से विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता युक्त मल्टीमीडिया शैक्षिक सामग्री को विकसित करने में सक्षम हो सकेगा। इसके साथ ही विश्वविद्यालय की शिक्षण प्रथाओं में मल्टीमीडिया सामग्री का निर्बाध एकीकरण होगा। साथ ही संपूर्ण प्रदेश में डिजिटल शैक्षिक सामग्री की पहुंच का विस्तार समस्त हितग्राहियों तक होगा। मप्र. के लगभग 600 अध्ययन केन्द्र भोज से जु?कर विद्यार्थियों को सीईसी के संसाधनों का लाभ दिला सकेंगे। ब्रॉडकास्ट इंजीनियरिंग कंसलटेंट इंडिया लिमिटेड (बेसिल) के साथ होने वाले एमओयू से विश्वविद्यालय के ईएमपीआरसी स्टूडियो का उन्नयन किया जाऐगा। दृश्य एवं श्रव्य उपकरण होने से समस्त उपकरणों को नियंत्रित किया जा सकेगा। स्टूडियो के निर्माण के बाद एक वर्ष के लिये रख-रखाव एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित होगी। इन सुविधाओं से विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता युक्त ऑडियो-विडियो का निर्माण कर सकेगा। जिससे विद्यार्थी आधुनिक शिक्षण पद्धति के माध्यम से लाभान्वित हो सकेंगे।

मप्र बोर्ड: आज 12वीं की पूरक परीक्षा आज, 10 जून से दसवीं की होगी शुरू

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

माध्यमिक शिक्षा मंडल की 12वीं के सभी विषयों की पूरक परीक्षा शनिवार को आयोजित की जा रही हैं। वहीं कक्षा दसवीं की पूरक परीक्षाएं 10 से 20 जून तक आयोजित होंगी। दोनों परीक्षाओं का समय सुबह 8 से 11 बजे के बीच रखा गया है।

उल्लेखनीय है कि दसवीं-बारहवीं परीक्षा के परिणाम बीती 24 अप्रैल को घोषित किए जा चुके है। बारहवीं परीक्षा में केवल एक विषय व हाईस्कूल परीक्षा में दो विषयों में अनुत्तीर्ण छात्रों को पूरक की पात्रता प्रदान की गई है। माशिमं की दसवीं परीक्षा में 1,15,839 व बारहवीं में 1,04,745 विद्यार्थियों

का पूरक प्राप्त हुई है।पूरक परीक्षा के आवेदन एक मई से जमा होना शुरू हुए थे और 7 जून अंतिम तिथि निर्धारित की गई थी।

एमपीपीएससी

राज्य सेवा परीक्षा-2022 मुख्य परीक्षा परिणाम घोषित, 1286 का चयन

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

मप्र लोक सेवा आयोग (एमपीपीएससी) ने राज्य सेवा परीक्षा 2022 मुख्य परीक्षा के परिणाम घोषित कर दिए हैं। जिसमें साक्षात्कार के लिए चयनित कुल 1286 अभ्यर्थियों की सूची जारी की गई है। साक्षात्कार की तिथि अलग से बाद में जारी की जाएगी। उम्मीदवार मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर चेक कर सकते हैं। मुख्य परीक्षा 2022 के लिए जनवरी 2024 में 8 से 13 तारीख तक परीक्षा आयोजित की गई थी। यह

परीक्षा कुल 457 पदों के लिए थी जिसमें 87 फीसदी के तहत अंतिम रिजल्ट 1286 और 13 फीसदी में कुल 313 के लिए जारी हुआ है। मेन्स की यह परीक्षा 8 से 13 जनवरी को हुई थी। 457 पदों को भरने के लिए एमपीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा 2022 का आयोजन 21 मई, 2023 को दो पालियों में किया गया था। इसमें कुल 10351 उम्मीदवार सफल हुए थे।

सिविल अस्पताल के डॉक्टर पर कार्रवाई, ठाकुर निलंबित

हिरदाराम नगर, दोपहर मेट्रो

सिविल अस्पताल बैरागढ़ के डॉक्टर प्रवीण ठाकुर को सस्पेंड कर दिया गया है। आयुक्त भोपाल ने आदेश जारी कर दिया है। बता दे 21 मार्च को इमरजेंसी डयूटी के दौरान नशे की हालात में बदलसलूकी एवं अभद्रव्यवहार की शिकायत हुई है।

निलंबन आदेश में कहा गया है 4 जून 2024 से डॉ. प्रवीण ठाकुर चिकित्सा अधिकारी, सिविल अस्पताल बैरागढ़ को सस्पेंड किया जाता है। 21मई को अस्पताल इमरजेंसी कक्ष में डयूटी के दौरान आरोपी दीपक गुजराती निवासी गांधीनगर भोपाल के मेडिकोलीगल परीक्षण के समय गैर जिम्मेदाराना बर्ताव किया था। मेडिकल कराने आएए आरक्षक से बदसलूकी एवं अभद्र व्यवहार किया गया था। जिसके कारण विभिन्न समाचार पत्रों में उक्त खबर के प्रकाशित होने के कारण शासन की छवि धूमिल होने पर उनके विरूद्ध अनुशासनिक कार्यवाही हेतु प्रस्ताव इस कार्यालय को प्रेषित किया गया।

कलेक्टर, जिला भोपाल के प्रस्ताव के बाद डॉ.

प्रवीण ठाकुर चिकित्सा अधिकारी सिविल अस्पताल बैरागढ जिला भोपाल को प्रथम दृष्टया दोषी पाया गया है। उन्हें सिविल सेवा नियम 1966 के नियम 9 (क) के तहत तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाकर मुख्यालय, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला भोपाल नियत किया जाता है। निलंबन अवधि में डॉ. ठाकुर को नियामनुसार जीवन निर्वाह की पात्रता होगी। उक्त आदेश तत्काल प्रभावशील होगा।

सेठ चेतनदास पारदासानी में समाज सेवा का जुनून था-चांदवानी

हिरदाराम नगर, दोपहर मेट्रो

पूज्य सिंधी पंचायत के तत्वावधान में वरिष्ठ समाजसेवी, पंचायत के पूर्व उपाध्यक्ष सेठ चेतनदास पारदासानी की 22वीं पुण्यतिथि पूर्ण श्रद्धा से मनाई गई। आरंभ में पारदासानीजी के चित्र पर कार्यवाहक अध्यक्ष भरत आसवानी व अन्य उपस्थित सदस्यों ने मालार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गयी।

पंचायत सभागार में आयोजित कार्यक्रम में महासचिव माधू चांदवानी ने स्व चेतनदास की सेवाओ को प्रेरणादायी बताया श्री पारदासानी की हर क्षेत्र में तमाम उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्हे निःस्वार्थ सेवाओं का जुनून बताया। कहा हरिचेतन आश्रम का निर्माण पंचायत के फैसला बोर्ड एवं विकास में भरपूर सहयोग के साथ अनेक सामाजिक संस्थाओं एवं पारिवारिक समस्याओं के समाधान में जो सेवाएं दी है उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

अखिल भारतीय सिंधी समाज के महासचिव सुरेश जसवानी ने कहा कि स्व. चेतनदास पारदासानी की निःस्वार्थ समाज सेवा हर समाज सेवी को प्रेरणा देता रहेगा फलस्वरुप उनके मार्ग पर चलकर सेवा करना हो अपना जीवन सार्थक करना है। यह भी बताया कि स्व चेतनदास परमहंस संत हिरदाराम साहब के परम शिष्य रहते भी उनके सुपुत्र रामचंद पारदासानी अध्यक्ष सिंधू नव जागरण समिति, त नरेश पारदासानी तथा माधवदास पारदासानी की सेवाओं में भी स्व सेठ चेतनदास पारदासानी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद रही है इसमे दो मत नहीं। इस अवसर पर संत नरेश पारदासानी ने श्रद्धांजलि देते हुए भगवत गीता, गरुण पुराण पर अपने विचार रखे। बोरवन क्लब के अध्यक्ष व पंचायत के उपाध्यक्ष जगदीश आसवानी, गुलाब जेठानी, राज मनवानी ने भी स्व चेतनदास पारदासानी के जीवन पर विचार रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालो में नंद कुमार दादलानी, मोहन मीरचंदानी, हरीश मेहरचंदानी, घनश्याम लालवानी, राज वाधवानी, नरेश पेसवानी, दौलतराम सबनानी, प्रेम कुमार पठानी, दयाल दोलतानी, जानकीलाल भारानी, नारायण तनवानी, मुरली गुरबानी सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। अंत में दो मिनट का मोन धारण कर भावभीनी श्रद्धांजलि दी गयी।

मेट्रो एंकर स्मार्ट स्टडी स्किल, एंपावरिंग माइंड एवं इंटीग्रेटिंग टेक्नोलॉजी पर व्याख्यान

बच्चे की प्रतिभा को सामने लाने के लिए सकारात्मक वातावरण बनाना जरूरी

हिरदाराम नगर, दोपहर मेट्रो

शहीद हेमू कालानी एजुकेशनल सोसायटी द्वारा संचालित मिठी गोविंदराम पब्लिक स्कूल, नवनिध हासोमल लखानी पब्लिक स्कूल, सीएचआई गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल, केवलराम चैनराय पब्लिक स्कूल, विद्यासागर पब्लिक स्कूल में 'शिक्षक-शिक्षिका विकास उन्मुखीकरण सत्र' की श्रृंखला में 'स्मार्ट स्टडी स्किल, एंपावरिंग माइंड एवं इंटीग्रेटिंग टेक्नोलॉजी' विषय पर रत्ना सागर पब्लिकेशन के सौजन्य आईं अंतरराष्ट्रीय मेमोरी ट्रेनर, लेखिका, प्रेरक वक्ता, वैदिक गणित विशेषज्ञ अदिति सिंघल द्वारा उपर्युक्त विषय पर चर्चा कर शिक्षक-शिक्षिकाओं की विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

अपने संबोधन में आपने शिक्षक

शिक्षिकाओं से अपील की कि वे विद्यार्थी को किसी भी विषय पर तार्किक दृष्टिकोण अपनाने हेतु प्रेरित करें तथा विद्यार्थियों को अधिक से अधिक अवसर प्रदान कर उनकी प्रतिभा मुखरित करने में विशेष योगदान दें क्योंकि हर विद्यार्थी विशिष्टता लिए हुए है। कोई भी विद्यार्थी अपनी प्रतिभा को तभी मंच प्रदान कर सकता है जब उसके भीतर सकारात्मक दृष्टिकोण, विभिन्न कौशल, भयमुक्त वातावरण पोषित होगा। इसके पूर्व शहीद हेमू कालानी एज्यूकेशनल सोसाइटी के सचिव घनश्याम बूलचंदानी ने पुष्प गुच्छ भेंट कर अदिति सिंघल का स्वागत किया। इस अवसर पर शहीद हेमू कालानी एज्यूकेशनल सोसाइटी द्वारा संचालित विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य, उपप्राचार्य, हेड मिस्ट्रेस, कॉर्डिनेटर्स समेत बड़ी संख्या में शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थी।

संस्था की परंपरानुसार सचिव बूलचंदानी ने सत्र की मुख्य वक्ता अदिति सिंघल एवं रत्न सागर के सीनियर बिजनेस पार्टनर हरीश शिहानी का शाल एवं श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रीटा आहुजा द्वारा किया गया।

एनटीए में व्यापमं से बड़े घोटाले का आरोप

कांग्रेस का दावा- हमारे पास प्रमाण!

जांच की मांग

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

भोपाल मध्यप्रदेश कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) एक तानाशाही और घोटालाबाज संस्थान है और इस संस्थान ने व्यापमं से भी बड़ा घोटाला किया है। ये संस्थान देश के 50 लाख युवाओं के भविष्य को अपनी सरकार की तरह ही तानाशाही से खोखला कर रही है। नीट के पेपर में सालों से गड़बड़ी चल रही हैं। कांग्रेस मीडिया प्रमुख मुकेश नायक ने कहा है कि नीट के पेपर घोटाले के पक्के एवं पुख्ता सबूत हमारे पास उपलब्ध हैं। जिसमें दो बच्चों के 719 और 718 नंबर आये हैं जो कि इस मार्किंग स्कीम से असम्भव हैं। बच्चों को बेतहाशा ग्रेस मार्क्स बिना किसी कोर्ट के इस पेपर से संबंधित ऑर्डर बांटे गए हैं। एनटीए अगर मशीन से चेक हुये पेपर के बाद किसी के भी इस तरह से नंबर बड़ा सकती है तो इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि एनटीए द्वारा कितने साल से व्यापमं से बड़ा यह घोटाला चल रहा था और कितनी परीक्षाओं में इसका असर था यह बच्चों के भविष्य को लेकर बड़ा गंभीर विषय है। नायक ने कहा कि इन घोटालों से न जाने कितने बच्चे तनाव से पीड़ित होकर अपना भविष्य बर्बाद करने पर मजबूर हो जाते हैं। इतना ही नहीं कुछ बच्चे तो इस कारण आत्महत्या करने जैसा कदम उठा लेते हैं। इस वर्ष हुई नीट की परीक्षा में खराब परीक्षा परिणाम आने से मध्य प्रदेश के रीवा जिले की एक छात्रा बागीशा तिवारी ने हाल ही में कोटा में आत्महत्या जैसा कदम उठाया है।

मैहर सीमेंट फैक्ट्री व 70 एकड़ जमीन का मामला

निलंबित रेंजर-एसडीओ को स्टे, जावद रेंजर को लेकर एसोसिएशन का अड़ंगा

– वन विभाग के अफसरों पर कार्रवाई को लेकर राज्य वन सेवा के अधिकारी मुखर

– दोनों ही मामले जमीन से जुड़े, जिनमें शासन द्वारा गलत कार्रवाई करने के आरोप

भोपाल, दोपहर मेट्रो। मैहर सीमेंट फैक्टरी प्रबंधन द्वारा वन भूमि पर अतिक्रमण मामले में जिस रेंजर सतीषचंद्र मिश्रा और एसडीओ यशपाल मेहरा को निलंबित किया था, उन्हें हाईकोर्ट ने स्टे दे दिया है तो उधर नीमच के जावद रेंजर के पक्ष में राज्य वन सेवा के अधिकारी आ गए हैं। इन दोनों ही मामले जमीन से जुड़े हैं, वह भी सरकारी जमीन है। जिसको लेकर इन्होंने कार्रवाई की थी जिस पर शासन के अधिकारियों ने इन्हें निलंबित कर दिया था।

मैहर रेंजर-एसडीओ का मामला

मैहर सीमेंट फैक्ट्री प्रबंधन पर वन विभाग ने आरोप लगाए कि मैहर की 70 एकड़ वन भूमि पर अतिक्रमण किया गया। यह अतिक्रमण 2002 से है। उक्त मामले में 31 मई को वन विभाग ने इस मामले में मैहर रेंजर सतीषचंद्र मिश्रा और एसडीओ यशपाल मेहरा को निलंबित किया। लेकिन इन दोनों अधिकारियों को गुरुवार हाईकोर्ट ने स्थगन दे दिया है। इन्होंने निलंबन को यह कहते हुए चुनौती दी थी कि वे दोनों इसके लिए जिम्मेदार नहीं है क्योंकि अतिक्रमण पुराना है और वे उन्हें आए हुए डेढ़ से दो वर्ष हुए हैं। पुराने अधिकारियों के समय अतिक्रमण हुआ था, जिसे उन्होंने प्रकाश में लाया है और अपराध भी दर्ज किया है।

जावद रेंजर का मामला- स्टेट फॉरेस्ट रेंजर्स

एसोसिएशन ने जावद रेंजर विपुल करोरिया को निलंबित किए जाने पर विरोध दर्ज कराया है। अध्यक्ष शिशुपाल अहिरवार ने मुख्यमंत्री, एसीएस और वन बल प्रमुख को पत्र लिखा है। जिसमें कहा कि रेंजर ने नियमानुसार कार्रवाई की, फिर भी उन्हें निलंबित किया गया, जो नियम के खिलाफ है इसलिए उन्हें बहाल किया जाए। वन भूमि पर उद्योग विभाग के ठेकेदारों द्वारा बिना अनुमति किए जा रहे निर्माण कार्य को रुकवाने के लिए रेंजर ने उक्त कार्रवाई की थी, जिन्हें बीते दिनों उज्जैन संभागायुक्त द्वारा निलंबित किया था।

मैहर सीमेंट फैक्ट्री अतिक्रमण मामला- नीचे से ऊपर तक सब मिले

मैहर में वन विभाग की 70 एकड़ जमीन पर सीमेंट फैक्ट्री प्रबंधन ने न केवल अवैध कब्जा किया बल्कि रहवासी कॉलोनी, कॉलेज, अस्पताल और पक्के हॉट बाजार भी तान दिए। यह किसी एक अधिकारी की सह या लापरवाही पर नहीं हुआ, बल्कि उस क्षेत्र के नीचे से लेकर ऊपर तक के अधिकारियों के इसमें मिले होने की बात सामने आ रही है। ये तत्कालीन अधिकारी थे जो क्षेत्र में लंबे समय तक पदस्थ रहे थे। ये अधिकारी फैक्ट्री प्रबंधन को अप्रत्यक्ष सहयोग करते रहे। यहां तक कि उक्त वन भूमि पर तानी गई कॉलोनियों, अस्पताल, स्कूल, कॉलेज, हाट बाजार समेत अन्य पक्के निर्माण कार्यों के लिए तत्कालीन अधिकारियों ने अनुमतियां भी दी थी। उक्त जमीन की कीमत 60 से 70 करोड़ रुपये से अधिक बताई जा रही है।

मुख्यमंत्री मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा दिल्ली में मप्र के नवनिर्वाचित सांसदों के साथ एनडीए की बैठक में शामिल हुए। इससे पहले उन्होंने दिल्ली स्थित मध्यप्रदेश भवन में सांसदों ने भेंट की।

नीट परीक्षा परिणामों को एमपी हाईकोर्ट में चुनौती, सोमवार को सुनवाई

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) परीक्षा के परिणामों को एमपी हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है। नीट परीक्षा में भाई भतीजावाद और भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए जबलपुर की एक छात्रा की ओर से यह याचिका दायर की गई है। याचिका पर सोमवार को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट में सुनवाई हो सकती है।

जानकारी के अनुसार, छात्रा को परीक्षा में 720 में से 615 नंबर मिले हैं। याचिका में एक कोचिंग सेंटर के आठ छात्रों के नाम व रोल नंबर एक समान होने का हवाला दिया गया है। याचिका में बताए गए सभी 8 छात्रों को परीक्षा में शत प्रतिशत अंक मिलने का आरोप लगाया गया है। नीट की परीक्षा प्रणाली पर याचिका में गंभीर सवाल उठाए गए हैं। एक ही कोचिंग संस्थान के 6 छात्रों को शत प्रतिशत अंक और दो को 718 और 719 अंक प्राप्त होने पर सवाल भी खड़े किए गए हैं।

कार्यकर्ताओं ने की आतिशबाजी, बांटी मिठाइयां

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

प्रधानमंत्री को एनडीए संसदीय दल का नेता चुने जाने के बाद भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कार्यालय में उत्सव मनाया गया। पार्टी कार्यकर्ताओं ने आतिशबाजी कर मिठाइयां बांटी एवं एक-दूसरे को बधाई दी। प्रदेश महामंत्री भगवानदास सबनानी ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनेगा। इस मौके पर कार्यकर्ताओं ने पटाखे जलाए व मिठाईयां बांटी।

छात्र-छात्राएं 10 तक फीस जमा कर ले सकेंगे प्रवेश

बीयू: पीजी में प्रवेश लेने नॉन सीयूईटी ने किया आवेदन, रजिस्ट्रेशन निरस्त

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी (बीयू) के पीजी कोर्स में प्रवेश के लिए काउंसलिंग प्रक्रिया चल रही है। दस्तावेजों के सत्यापन के बाद आधे से ज्यादा ऐसे छात्र सामने आए जो कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (सीयूईटी) ने शामिल नहीं हुए थे। इन छात्रों ने बीयू में प्रवेश के लिए आवेदन किया था। जबकि पहले राउंड में बीयू में केवल सीयूईटी वाले छात्रों को ही प्रवेश दिया जाना है। इसलिए इन छात्रों के आवेदन निरस्त कर दिए गए हैं। इनकी संख्या 200 से अधिक हैं। इन छात्रों को दूसरे राउंड में प्रवेश दिया जाएगा। बीयू में प्रवेश के लिए आवेदन प्रक्रिया 22 मई से शुरू की गई थी। बीयू ने 3 जून को सीयूईटी देने वाले छात्रों को सीटों को आवंटन जारी कर दिया है। छात्र-छात्राएं 10 जून तक फीस जमा कर प्रवेश ले सकते हैं। इस दौरान यदि कोई छात्र रजिस्ट्रेशन नहीं करा पाता है, तो उसे सीटें खाली रहने पर यूजी की मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। खाली सीटों पर मैरिट के आधार पर प्रवेश 21 जून से शुरू होंगे। विवि के कैंपस में 28 टीचिंग डिपार्टमेंट्स हैं। इनमें 40 पोस्ट ग्रेजुएशन (पीजी) कोर्स संचालित हो रहे हैं। इनमें एलएमएम, एमए योगा, एमकॉम सहित कुछ कोर्स के लिए सीयूईटी में सबसे अधिक छात्रों ने आवेदन किया था। एक्काकल्चर विभाग के एचओडी विपिन व्यास ने बताया कि उनके विभाग में 31 छात्रों ने प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन कराया था। इसमें से 16 छात्र नॉन सीयूईटी के थे। इनके आवेदन फिलहाल रद्द कर दिए गए हैं।

इग्नू के 4 नए कोर्स में पढ़ाई का मौका, आवेदन 30 तक

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्नू) के जुलाई सत्र में दाखिले के लिए उम्मीदवार 30 जून तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। इस साल उम्मीदवारों को स्नातकोत्तर प्रोग्राम में चार नए प्रोग्राम में पढ़ाई का मौका मिलेगा। इस प्रोग्राम में सभी चारों कोर्स एमएससी के हैं। यह कोर्स ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग मोड (ओडीएल) से चलेंगे। इसमें पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी रहेगा। इग्नू के उपनिदेशक डॉ. अंशुमान उपाध्याय ने बताया कि इन कोर्सेज में दाखिले के लिए न्यूनतम योग्यता अलग-अलग रहेगी। जुलाई सत्र में उम्मीदवारों को एमएससी बॉयोकेमिस्ट्री, एमएससी एनालिटिकल केमिस्ट्री,एमएससी जूलॉजी और एमएससी केमिस्ट्री में भी पढ़ाई का मौका मिल रहा है।

30 जून तक तीन सब्जेक्ट की पढ़ाई, राष्ट्रीय शैक्षिक प्रबंधन और प्रशिक्षण संस्थान देगा ट्रेनिंग

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

भीषण गर्मी के बीच शिक्षकों को पढ़ाई के लिए स्कूल जाना होगा। एक जून से इनकी कक्षाएं शुरू हो रही हैं। यह 30 जून तक चलेगी। शिक्षकों को यहां अलग-अलग विषयों की सीख दी जाएगी। कक्षा नौवीं और दसवीं के शिक्षकों के लिए ये क्लास होगी। राष्ट्रीय शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान यह प्रशिक्षण देगा। नौवीं और दसवीं कक्षा पढ़ाने वाले शिक्षकों को गणित, विज्ञान और अंग्रेजी की सीख दी जाना है। जारी निर्देश के तहत एक जून से अंग्रेजी के लिए ट्रेनिंग शुरू होगी। इसमें संभाग के सभी स्कूलों के शिक्षक पहुंचेंगे। पांच जून से विज्ञान और 12 जून से गणित विषय के लिए ट्रेनिंग होगी। तीन अलग-अलग बैच में शिक्षकों को बुलाया जा रहा है। शिक्षकों को हर बार मुख्यालय तक न आना पड़े इसके लिए मास्टर ट्रेनर भी तैयार किए जा रहे हैं। राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमेट) के मुताबिक संभाग स्तर पर दी जाने वाली ट्रेनिंग के लिए 9 जून के बीच मास्टर ट्रेनर को भी तैयार किया जा रहा है।

संपादकीय

सरकार का नया रास्ता

देश में सरकार का गठन का सवाल आखिर हल हो ही गया है। भाजपा संसदीय दल की बैठक में कल नरेंद्र मोदी को नेता चुने जाने और सरकार बनाने का दावा पेश कर देने के बाद संभवत- नौ जून को शपथ हो सकती है। इस तरह मोदी लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन जायेंगे। भाजपा की भी दबीछिपी यही साध थी और संभवत- मोदी की भी, कि वे तीसरी बार पीएम बनकर जवाहरलाल नेहरू का रेकार्ड बराबर करें। हालांकि भाजपा की राह में वैसी जीत नहीं आ सकी,जो तब नेहरु की तीसरी पारी का आधार बनी थी,लेकिन राजनीति के बदलते दौर में यह भी बड़ी उपलब्धि है कि भाजपा तीसरी बार सरकार की नेतृत्व करने जा रही है। मगर इस बार भाजपा को सहयोगी दलों की निर्भरता बहुत अच्छीनहीं लग रही होगी। बैठक में जिस सहजता से नरेंद्र मोदी के नाम पर सर्वसम्मति बन गई, उसे देखते हुए यह तय माना जा रहा था कि वे संसदीय दल की बैठक में भी सहज रूप से चुने जायेंगे। फिर भी यह सवाल बना हुआ है कि पीएम मोदी का तीसरा टर्म उनके पिछले दोनों कार्यकालों से किन अर्थों में और कितना अलग होगा। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में डेढ़ दशक तक सरकार चलाने का अनुभव हो या केंद्र में प्रधानमंत्री के रूप में एक दशक का, हमेशा सुविधाजनक बहुमत उनके साथ रहा है। उनकी छवि भी बड़े और कड़े फैसले लेने वाले मजबूत नेता की रही है। इस बार उनकी अपनी पार्टी बहुमत के लिए जरूरी आंकड़े से दो-चार नहीं पूरे 32 सीटें दूर खड़ी है। लिहाजा सरकार को समर्थन दे रहे जेडीयू और टीडीपी जैसे दल इसकी भरपूर कीमत तो वसूलेंगे ही । कल बैठक में उन्होंने चाहे जितने सहयोग व समन्वय के दावे किये हों लेकिन राजनीति में हर दिन नया होता है, यह बात भाजपा,मोदी,खुद नीतीश व नायडू भलीभांति समझते हैं। अहम सवाल यह है कि इस कीमत का स्वरूप क्या होगा। क्या ये दल पदों और विभागों की सौदेबाजी से ही संतुष्ट हो जाएंगे या वे सरकार की नीतियों और फैसलों को भी खास दिशा देने की कोशिश करेंगे? उनके पुराने ट्रेक रेकार्ड से लगता तो यही है कि इन दोनों ही मोर्चों पर ये दल अपना दखल बनाए रखना चाहेंगे। इसके संकेत दो दिन पहले मिले हैं, जब जेडीयू ने कहा कि मतदाताओं के एक हिस्से की आशंकाओं को देखते हुए सरकार को अग्निवीर योजना की समीक्षा करनी चाहिए। यही नहीं, पार्टी ने कास्ट सेंसस को भी वक्त की जरूरत भी बता दी। जाहिर है, इन दोनों मसलों पर कोई बीच की राह निकालने की जरूरत बन रही है। ऐसे में यह सवाल बड़ा है कि मोदी सरकार 3.0 के दौरान क्या कामकाज उसी तरह से चल पाएंगे, जैसे पिछले दो कार्यकालों में चले थे। चूंकि आर्थिक सुधारों पर देश में एक तरह की राजनीतिक सर्वसम्मति रही है, इसलिए यह उम्मीद जरूर की जा सकती है कि सुधारों का अजेंडा ज्यादा प्रभावित नहीं होगा, लेकिन इसकी रफ्तार कम न पड़े, इसके लिए विशेष प्रयासों की जरूरत पड़ सकती है। वैसे चुनाव नतीजों में सीटों के पैटर्न पर नजर डालें तो पता चलता है कि 2019 के मुकाबले 2024 में एनडीए को मिली ग्रामीण सीटों में कमी आई है। वहीं बिहार को विशेष दर्जा और आंध प्रदेश को विशेष मदद जैसी मांगों से निपटना भी मोदी सरकार की मजबूरी होगा। यह चुनौती बहुत सहजता से नहीं ली जा सकती,क्योंकि इस बार जनता ने देश में बेहद मजबूत विपक्ष को भी चुना है।

ख़ास होने का भ्रम न पालो,
आपको पाकर लोग आपसे
बेहतर की तलाश करते है

आज का इतिहास

- 1882 न्यूयॉर्क के हेनरी डब्ल्यू सिले ने इलेक्ट्रिक आयरन का पेटेंट लिया।
- 1882 शेवा साम्राज्य ने गोजाम को हराकर और गिबे नदी के दक्षिण में धमनियों पर नियंत्रण हासिल करके इथियोपियाई साम्राज्य पर आधिपत्य हासिल करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया।
- 1892 शिकागो के एल ट्रेन यूनाइटेडस्टेट्स में कुल ट्रैक माइलेज में दूसरा सबसे लंबा रैपिड ट्रांजिट सिस्टम, संचालन शुरू हुआ।
- 1894 कोलोराडो के गवर्नर डेविस हैनसन वेइट ने अपने राज्य मिलिशिया को क्रिप्पल माइनर्सस्ट्राइक में लगे खनिकों की रक्षा और समर्थन करने का आदेश
- 1912 20 वीं शताब्दी के दूसरे-सबसे बड़े विस्फोट ने अलास्का प्रायद्वीप, अमेरिका में नोवारुप्त ज्वालामुखी का निर्माण किया।
- 1912 20 वीं सदी के सबसे बड़े विस्फोट ने अमेरिका के अलास्का प्रायद्वीप में नोवारुप्त ज्वालामुखी का निर्माण किया।
- 1916 अमेरिका के ईस्ट क्लीवलैंड में महिलाओं को वोट का अधिकार दिया गया
- 1919 फिनलैंड ने बोलशेविक के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
- 1919 हंगरियन रेड आर्मी ने रिपब्लिक ऑफ प्रीकममुर्जे पर हमला किया।
- 1919 गणराज्य समाप्त हो गया। प्रिकुमर्जे एक अपरिचित राज्य था। यह हंगरी का एक क्षेत्र था जिसे पारंपरिक रूप से वेंडीविदक के रूप में जाना जाता था। यह कम्युनिस्ट और विरोधी कम्युनिस्ट ताकतों के बीच युद्ध के दौरान आक्रमण किया गया था।
- 1926 मिस्र में एडली पाशा के नेतृत्व में सरकार बनी।
- 1946 राष्ट्रीय बास्केटबॉल संघ की स्थापना की गई। राष्ट्रीय बास्केटबॉल संघ एनबीए केवल 11 टीमों के साथ शुरू होता है।

निशाना

और किसी को टाटा !

- कृष्णेन्द्र राय

है कहीं पर मातम ।
कहीं खुशी है छाई ।।
अपने अपने ढंग से ।
है सबकी अंगड़ाई ।।
है कहीं पर चहल-पहल ।
और कहीं सन्नाटा ।।
है किसी को हाय हैलो ।
और किसी को टाटा ।।
रंगमंच अब है सजा ।
होगा शुरू खेल ।।
हर पल अब अनोखा ।
दिख जाएगा मेल ।।
जनता को भी हो जाता ।
यह सब कुछ स्वीकार ।।
जो गले में दिख रहा ।
हैं उसी का हार ।।

लोकसभा चुनाव परिणाम और भाजपा

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के तुरंत बाद चुनाव न कराकर भाजपा ने की गलती!

■ विनोद पाठक

4 जून को जैसे-जैसे ईवीएम खुल रही थीं और वोटों की गिनती हो रही थी, वैसे-वैसे भारतीय जनता पार्टी बहुमत के जादुई आंकड़े से पिछड़ती जा रही थी, तब एक विचार भाजपा कार्यकर्ताओं के मन में जरूर आ रहा था, काश ! अयोध्या में भागवान राम के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के ठीक बाद फरवरी-मार्च में लोकसभा चुनाव करा लिए जाते तो पार्टी को राम मंदिर की लहर का भरपूर लाभ मिलता। वो बहुमत का आंकड़ा स्वयं अपने बल पर हासिल कर लेती। यह विचार अब इसलिए भी उठ रहा है, क्योंकि पिछले साल नवंबर-दिसंबर में सोशल मीडिया पर यह चर्चा बहुत तेजी से चली थी।दरअसल, उन चर्चाओं में कहा जा रहा था कि 22 जनवरी को राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की शाम को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोकसभा भंग कर नए चुनावों की सिफारिश राष्ट्रपति से करने वाले हैं। इस चर्चा का शुरुआत में सरकार की ओर से कोई खंडन नहीं आया। हालांकि कई दिनों की चर्चा के बाद नरेंद्र मोदी सरकार के कुछ मंत्रियों ने जल्दी चुनाव के इस विचार को खारिज किया। तब यही कहा गया था कि मोदी 2.0 सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी और समय पर चुनाव होंगे।

वैसे आज की परिस्थितियों को देखकर लगता है कि भाजपा ने राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के तुरंत बाद लोकसभा चुनाव नहीं कराकर बड़ी राजनीतिक भूल की है, क्योंकि उस समय देश में राम मंदिर को लेकर एक लहर दौड़ रही थी। हर घर पर भगवा लहरा रहा था। लोग दीपावली मना रहे थे। फिर दिसंबर में भाजपा तीन बड़े राज्यों राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में बहुमत के साथ सरकार में लौटी थी। तीनों राज्यों में भाजपा को अच्छा समर्थन मिला था। हालांकि, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में तो भाजपा ने उस समर्थन को सीटों में तब्दील कर लिया है, लेकिन राजस्थान में पार्टी हैट्रिक लगाने से चूक गई। दरअसल, राज्य में 25 में से 11 सीटें पार्टी हार गई है। फरवरी में चुनाव कराने का सबसे अधिक लाभ राजस्थान में मिल सकता था, क्योंकि राम मंदिर के लिए सर्वाधिक चंदा यदि किसी राज्य से आया तो वो राजस्थान है। राम मंदिर की लहर में जाति की राजनीति भी पीछे छूट जाती। उस दौरान इंडी गठबंधन केवल बैठकों में जुटा था। गठबंधन में किसी एक मुद्दे पर सहमति नहीं बन पा रही थी।

नरेंद्र मोदी का समय से पहले लोकसभा चुनाव कराने का फैसला इंडी गठबंधन को हैरान कर देता। इंडी गठबंधन को चुनावी तैयारी का खास मौका नहीं मिल पाता। उसका विश्वास डगमगा जाता। दूसरा, कांग्रेस ने राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण पत्र ठुकरा दिया था। समाजवादी पार्टी के सुप्रीमो अखिलेश यादव समेत कई अन्य दलों ने प्राण प्रतिष्ठा समारोह में न जाने का निर्णय लिया था। उस समय इन पार्टियों की छवि हिंदू विरोधी होने का प्रचार भाजपा कर रही थी। दरअसल, राम मंदिर भाजपा के उन तीन प्रमख मुद्दों में शामिल रहा है, जिन्हें लेकर पार्टी अपने गठन के साथ संकल्प पत्र में शामिल करती आ रही है। जम्मू- कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने का वादा पूरा होने के बाद राम मंदिर पर पार्टी ने पूरा दांव लगाया था। जनता भी इस बात से खुश थी कि 500 साल की लड़ाई के बाद अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बनकर तैयार हो रहा है। अयोध्या में विकास की कई योजनाएं सरकार चला भी रही है। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार धार्मिक पर्यटन पर बहुत जोर दे रही है।यदि फरवरी-मार्च में चुनाव हो जाते हैं तो इसका सकारात्मक प्रभाव वोटरों पर पड़ता। उस समय अयोध्या के साथ मथुरा और काशी की बात तेजी से उठ रही थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि पहुंचे थे। वो पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने जन्मभूमि जाकर भगवान के दर्शन किए। यही वो समय था, जब काशी में ज्ञानव्यापी को लेकर भी कोर्ट में केस गर्माया हुआ था। तीनों मंदिरों को लेकर एक ज्वार देश में आया हुआ था। फरवरी-मार्च में लोकसभा चुनाव का लाभ सर्वाधिक उत्तर प्रदेश में मिलता, जहां अभी भाजपा की पिछले तीन चुनावों में सबसे बुरी तरह हार हुई है। वो 33 सीटों पर सिमट कर रह गई है। यदि राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के ठीक बाद चुनाव और अब चुनाव का आकलन करें तो स्पष्ट हो जाता है कि तब भाजपा वर्ष 2014 वाला करिश्मा दोहरा सकती थी, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, लोगों के जहन से राम मंदिर का मुद्दा ओझल होता चला गया। इंडी गठबंधन को न केवल तैयारियों के लिए अतिरिक्त समय मिला, बल्कि आरक्षण, संविधान जैसे मुद्दों पर उसने वोटरों का रुख अपनी ओर भी कर लिया।

हालांकि, समय से पूर्व लोकसभा चुनाव न कराने के पीछे नरेंद्र मोदी के आगे पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का उदाहरण भी रहा होगा। वर्ष 2004 में अटल बिहारी वाजपेयी ने दिसंबर 2003 में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में विधानसभा चुनावों में जीत से उत्साहित होकर समय से पूर्व लोकसभा चुनाव कराने का जोखिम लिया था। तब पार्टी को शाइनिंग इंडिया कैंपन पर बहुत अधिक भरोसा था। आज की तरह उस समय भी भाजपा अति आत्मविश्वास से लबरेज थी। तब अटल बिहारी वाजपेयी वर्ष 1999 के चुनाव वाला करिश्मा नहीं दोहरा पाए थे और पार्टी सत्ता से बाहर हो गई थी। फिर अगले एक दशक तक भाजपा सत्ता में लौट नहीं सकी। वर्ष 2004 में तत्कालीन उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने समय से पहले लोकसभा चुनाव कराने को पार्टी हित में बताया था। वर्ष 2004 की हार से अटल बिहारी वाजपेयी उभर नहीं सके थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस बात पर अब मंथन कर रहे होंगे कि यदि लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया फरवरी-मार्च में संपन्न कर ली जाती है तो पार्टी अच्छी स्थिति में रहती और तीसरी बार बहुमत के साथ वो सत्ता में वापसी करते। उन्हें गठबंधन के साथियों पर निर्भर नहीं होना पड़ता। जिन बड़े फैसलों की चर्चा वो चुनाव के दौरान कर रहे थे, उन्हें वो खुलकर लागू करा पाते। अब उन्हें हर फैसले को लेकर सहयोगी दलों पर आश्रित होना पड़ेगा। समय से पूर्व लोकसभा चुनाव न कराने की गलती भाजपा को बहुत भारी पड़ी है। यहां तक वो अयोध्या की सीट तक हार गई, जिसका मनोवैज्ञानिक दबाव निश्चित रूप से पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों पर पड़ रहा है।

- साभार: यह लेखक के अपने विचार हैं।

बंगाल में राज्य प्रायोजित हिंसा एक बदनुमा दाग

■ ललित गर्ग

लोकसभा चुनाव के बाद एक बार फिर पश्चिम बंगाल में हिंसा का बढ़ना, लोगों में डर पैदा होना, भय का वातावरण बनना, आम जनजीवन का अनहोनी होने की आशंकाओं से घिरा होना चिंताजनक भी है और राष्ट्रीय शर्म का विषय भी है। यही वजह है कि कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका दायर की गई है, जिसमें विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने की मांग की गई है। याचिका में मांग की गई है कि पुलिस को निर्देश दिए जाएं कि वे विपक्षी कार्यकर्ताओं को हिंसा से बचाने के लिए सुरक्षा दें। पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव बाद की हिंसा पर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई एवं ममता बनर्जी सरकार को कड़ी फटकार लगाई। चुनाव के बाद एवं लोकसभा चुनाव के प्रचार दौरान तृणमूल कांग्रेस ने व्यापक हिंसा, आतंक एवं अराजकता का माहौल बनाया। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता पार्टी जीत के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं पर जिस तरह के हिंसक हमले कर रहे हैं, वह लोकतंत्र पर एक बदनुमा दाग है। ममता बनर्जी ने चुनाव के महापर्व को हिंसक बना दिया था, उसने एवं उसके कार्यकर्ताओं ने भाजपा कार्यकर्ताओं से, हिन्दुओं से, हिन्दू मन्दिरों-भगवानों-संतों एवं हिन्दू पर्वों से नफरत का बिगुल हर मो? पर बजाया है। बंगाल में राजनीतिक हिंसा का सिलसिला चुनाव के पहले ही कायम हो गया था। राज्य में हिंसा की अनेक घटनाएं चुनाव के दौरान भी देखने को मिलीं और अब चुनाव समाप्त हो जाने के बाद भी देखने को मिल रही हैं, जिनमें ग्यारह लोगों की मौत होना दुर्भाग्यपूर्ण है, इसका सीधा अर्थ है कि यह हिंसा तृणमूल कांग्रेस नेताओं के इशारे पर हो रही है। हैरानी नहीं कि अराजक तत्वों को बंगाल पुलिस का मौन समर्थन हासिल हो। चुनाव परिणाम घोषित होने के बाद तृणमूल कांग्रेस ने 'आतंक का राज' फैला दिया है। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता विरोधी दलों और विशेष रूप से भाजपा नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को निशाना बना रहे हैं। ऐसा तब हो रहा है, जब चुनाव आयोग के निर्देश पर बंगाल में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती 19 जून तक बड़ा दी गई है। ऐसा चुनाव बाद हिंसा की प्रबल आशंका को देखते हुए किया गया था। यह आश्चर्यजनक है कि बंगाल में केंद्रीय सुरक्षा बलों की चार सौ कंपनियां तैनात हैं और फिर भी वहां व्यापक हिंसा हो रही है। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि तृणमूल कांग्रेस हिंसा को कितने नियोजित ढंग से अंजाम दे रही है। इस हिंसा एवं अराजकता के बड़ने के प्रबल आसार इसलिए हैं, क्योंकि राज्य में विधानसभा चुनाव के दौरान भी बड़े पैमाने पर जो हिंसा हुई थी, लोकसभा चुनाव में भी हिंसा हुई, पूर्व के अन्य चुनावों में भी हिंसा का बोलबाला रहा है। ऐसी स्थितियों में बंगाल में लोकतंत्र की भावना एवं मर्यादा का खुला हनन हो रहा है। इतनी व्यापक हिंसा बंगाल पुलिस के मूकदर्शक बने रहने एवं उसके सहयोग के बिना असंभव है। इसी के चलते तमाम भाजपा कार्यकर्ता और उसके समर्थकों की हत्या की गई थी। पूर्व की हिंसा एवं आतंक के समय ऐसा माहौल बनाया गया था कि कई लोगों को अपना घर-बार छोड़कर पलायन करते हुए पड़ोसी राज्य असम में शरण लेनी पड़ी थी। इन जटिल होती स्थितियों को देखते हुए न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ रहा है, जो एक लोकतांत्रिक सरकार के लिये लज्जाजनक है।

पश्चिमी बंगाल की ममता सरकार देश में एकमात्र ऐसी सत्तारुढ़ पार्टी बन गई है जिसका देश के संविधान, न्यायपालिका एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भरोसा नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार से लेकर मनमर्जी एवं तानाशाही का शासन चलाना मुख्यमंत्री ममता बनजम की प्रक्रिया बन गयी है। 2021 में विधानसभा चुनाव के बाद हुई हिंसा का संज्ञान लेते हुए कलकत्ता उच्च न्यायालय ने सीबीआइ को हिंसक घटनाओं की जांच करने को कहा था। इस जांच के दौरान तृणमूल कांग्रेस के अनेक नेताओं को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन ऐसा लगता है कि यह कार्रवाई भी तृणमूल कांग्रेस के अराजक तत्वों के दुस्साहस का दमन नहीं कर सकी। इसका प्रमाण 2023 में पंचायत चुनाव के दौरान हुई भीषण हिंसा से मिला था, जिसमें 40 से अधिक लोगों की जान गई थी। इस लोकसभा चुनाव में भी हिंसा के चलते कई लोगों की जान जा चुकी है। यह ठीक है कि चुनाव बाद हिंसा पर कलकत्ता उच्च न्यायालय ने नाराजगी व्यक्त करते हुए यहां तक कहा कि यदि राज्य सरकार हिंसा पर लगाम नहीं लगा सकती तो केंद्रीय सुरक्षा बलों को बंगाल में पांच साल तक तैनात करने का आदेश देना पड़ सकता है। उच्च न्यायालय की इस कठोर टिप्पणी के बाद भी ममता सरकार की सेहत पर शायद ही कोई असर पड़े, क्योंकि वह सारा दोष विरोधी दलों पर मड़ देती है। वास्तव में जब तक बंगाल में हिंसा के लिए ममता सरकार को सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, तब तक राज्य के हालात सुधरने वाले नहीं हैं। ममता वोट बैंक की राजनीति के लिये कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था की धज्जियां बार-बार उड़ाती रही है। ममता ने देश की एकता-अखंडता और सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों को नजरअंदाज किया है, कानून से खिलवाड़ जितना पश्चिमी बंगाल में हुआ है उतना शायद ही देश के किसी दूसरे राज्यों में हुआ हो। चुनावों में जितनी हिंसा बंगाल में हुई, उतनी अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिली। बंगाल का लोकतंत्र तानाशाही मानसिकता से गुजर रहा है। इन स्थितियों से तो यही लगता है कि राजनीतिक वोट बैंक के लिए ममता संविधान एवं सुरक्षा-व्यवस्था की जितनी अवमानना कर सकती है, उसने की है और आगे भी वह करती रहेगी। चुनावों में ऐसी हिंसक एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियां लोकतंत्र पर एक धुंधलका है, जिस पर नियंत्रण जरूरी है। लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों के परिणामों ने पूरे देश को चौंकाया है उनमें पश्चिम बंगाल भी शुमार है। पश्चिम बंगाल में चुनाव परिणाम इसलिये भी आश्चर्य में डाल रहे हैं कि वहां तृणमूल कांग्रेस सरकार के खिलाफ व्यापक नाराजगी थी, ममता सरकार के कई मंत्रियों और विधायकों पर घोटाले के आरोप लगे थे, संदेशखाली की महिलाओं पर हुआ अत्याचार देश भर में बड़ा मुद्दा बन गया था, ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के इर्दगिर्द ईडी का शिकंजा कसा हुआ था, ममता बनर्जी को सनातन विरोधी बताया जा रहा था, तृणमूल कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने चुनावों से ऐन पहले पाला बदल लिया था, तृणमूल कांग्रेस पर हिंसक एवं अराजक होने का तगमा लगा था, बावजूद ममता जीती। देखा जाये तो ममता बनर्जी की छवि जुझारू एवं कद्दावर नेता की रही है और वह अपनी पार्टी को जिताने के लिए जी-जान लगा देती हैं। चुनाव प्रचार के दौरान खुद पर होने वाले राजनीतिक हमलों को वह अपने पक्ष में मोड़ लेने में माहिर हैं। इसके अलावा, इंडिया गठबंधन के तमाम नेताओं ने विभिन्न राज्यों में सीटों का बंटवारा कर आपस में समन्वय बनाकर चुनाव लड़ा लेकिन ममता बनर्जी ने बंगाल में अकेले ही सारी चुनौती झेली। वह अपने बलबूते चुनाव जीतने का माद्दा रखती है तो फिर हिंसा का सहारा क्यों लेती है? अराजकता फैलाकर अपने ही शासन को क्यों दागदार बनाती है? क्यों अपने प्रांत की जनता को डराती है, भयभीत करती हैड़ क्या ये प्रश्न ममता की राजनीतिक छवि पर दाग नहीं है? ममता एवं तृणमूल कांग्रेस का एकतरफा रवैया हमेशा से समाज को दो वर्गों में बांटता रहा है एवं सामाजिक असंतुलन तथा रोष का कारण रहा है। बदले हुए राजनीतिक हालात इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किसी भी एक वर्ग की अनदेखी कर कोई भी दल राजसत्ता का आनंद नहीं उठा सकता। मुद्दा चाहे रामनवमी पर हिंसा का हो या संदेशखाली में हिन्दू महिलाओं के साथ अत्याचारों का या साधु-संतों को डराने-धमकाने का। राज्य में शीर्ष संवैधानिक पद पर रहते हुए भी ममता बनर्जी ने अलोकतांत्रिक, गैर-कानूनी एवं राष्ट्र-विरोधी कार्यों को अंजाम दिया है। बंगाल में तो भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता के जबड़े फैलाए, हिंसा की जीभ निकाले, मगरमच्छ सब कुछ निगल रहा है। ममता अपनी जातियों, गुरुपों और वोट बैंक को मजबूत कर रही हैं-- देश को नहीं। दुनिया के लोग केवल बुराइयों से लड़ते नहीं रह सकते, वे व्यक्तिगत एवं सामूहिक, निश्चित सकारात्मक लक्ष्य के साथ जीना चाहते हैं। अन्यथा जीवन की सार्थकता नष्ट हो जाएगी। बंगाल में आम जनजीवन की सार्थकता ही नष्ट हो रही है।

- साभार: यह लेखक के अपने विचार हैं।

सिवनी मालवा रेंज की जंगल कटाई की 5 महीने से चल रही है जांच

वन माफिया विभाग के अधिकारियों की पकड़ से आज भी कोसों दूर है !

डीएफओ बोले थे कि वनकर्मियों को देंगे राइफल आज तक नही मिली

सिवनी मालवा, संतोष सिंह चंदेल।

सिवनी मालवा वन परिक्षेत्र में लंबे समय से वन माफिया सक्रिय हैं जो रात के अंधेरे में जंगल की बेस किमती सागोन की लकड़ियां काट कर ले जा रहे हैं।

स्थानीय कर्मचारी अगर मौके पर उपस्थित रहते हैं तो जंगल माफिया की इस कारगुजारी से कटी हुई लकडियों को तो जप्त कर लिया जाता है लेकिन आरोपियों को पकड़ने में वन विभाग कोसों दूर रहता है।सिवनी मालवा के अंतर्गत आने बाली ठेकना बीट में लगभग 12 जनवरी 2024 की दर्मियानी रात को अवैध रूप से काटे गए 21 सागौन के विशाल पेड़ों की कटाई के लगभग 5-5 फीट के 100 टुकड़े कर के पिकअप में ले जाने की तैयारी कर रहे वन माफियाओं को वन विभाग की टीम के साथ मुठभेड़ में दो पिकअप वाहन और एक मोटरसाइकिल सहित लकड़ी छोड़कर वन माफिया भाग गया था। इस मामले में आज लगभग 5 महीने व्यतीत हो गए हैं। लेकिन आरोपियों को वन विभाग नहीं पकड़ पाया है। घटनास्थल पर पहुंचे सिवनी मालवा के पत्रकारों को डीएफओ अनिल चोपड़ा ने पूरी जानकारी प्रेस नोट के माध्यम से देने की बात कही थी लेकिन प्रेस नोट दूसरे दिन तक भी जारी नहीं हुआ था। जिससे पता चल सके की कितने घन मीटर लकड़ी जंगल से काटी और उनकी बाजार मूल्य क्या रही।

हां सीसीएफ श्री शुक्ला ने यह बात जरूर करी थी की वनकर्मियों को अपनी आत्मरक्षा के लिए राइफल दी जाएंगी। वनकर्मियों को आर्मूस चलाने के अधिकार नहीं है, किंतु विशेष परिस्थिति और आपातकाल में हवाई फायर कर सकते हैं। वहीं जंगल कटाई के दौरान राजसात किए गए वाहनों को गश्त में उपयोग करेंगे। जंगल से लगे हाईवे पर नई गस्त चौकी का निर्माण करना प्रस्तावित किया गया है, सीसीएफ ने बताया था कि जांच की जा रही है कि कटाई के दौरान कितने मोबाइल नंबर मौके पर एक्टिव थे। उनको ट्रेस करने के लिए और डिटेल के लिए टाइगर स्ट्राइक फोर्स की मदद लेंगे। लेकिन आज घटना को पांच महा व्यतीत हो गए हैं ना तो वन विभाग ने वहां कोई चौकी बनाई और ना ही कोई सुरक्षा के इंतजाम किए गए हां यह बात अलग है की पुरानी लकडीयों से बनी वन विभाग की चौकी को फोरलेन सड़क बनने के कारण इस पर जरूर बना ली गई है। जहां पर सुरक्षा के कोई भी इंतेजामत नहीं है ना तो वहां लाइट है ना पीने का पानी और नाही गस्ती के लिए वाहान हैं और ना ही मोबाइल का नेटवर्क मिलता है। अब इस स्थिति में जंगल की सुरक्षा भगवान भरोसे ही मानी जा सकती है।

जंगल कटाई के इस पूरे मामले में सूत्र बताते हैं की हाईवे से महज 100 कदम की दूरी पर 21 पेड़ काटे गए थे। माफिया ने जंगल में अंदर प्रवेश करने के लिए वन विभाग द्वारा बड़े वाहन अंदर ना जाए जिसके लिए एक नाली (टंच) बनाई थी जिसको लकड़ी चोरों ने उसे भरकर पहले रास्ता बनाया फिर जंगल में वाहनों ने प्रवेश किया। सूत्र बताते हैं सागौन से लदे वाहनों को रोकने के लिए वनकर्मियों ने नेशनल हाईवे निर्माण कर रहे हैं डंपर को रास्ते में खड़ा करके पिकअप वाहनों को रोकने में सफलता हासिल की थी।

मलेरिया रथ को सीएमएचओ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

मलेरिया निरोधक माह के अन्तर्गत मलेरिया से बचाव के प्रति जन जागरूकता

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो।

मलेरिया निरोधक माह के अन्तर्गत मलेरिया से बचाव के प्रति जन जागरूकता हेतु गुरूवार 7 जून को मलेरिया रथ को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ दिने देहलवार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर जिला मलेरिया अधिकारी, व अन्य स्वास्थ्य कर्मचारी उपस्थित थे। जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि यह रथ जिले के सभी विकासखण्डो मे तथा उनके अन्तर्गत आने वाले ग्रामों में भ्रमण करेगा तथा रथ के माध्यम से ग्रामीण जनता को मलेरिया / डेंगू से बचाव हेतु जानकारी दी जावेगी। रथ में मलेरिया निरोधक दवाये उपलब्ध रहेगी तथा बुखार पीडित मरीजो की रैपिड किट से जांच की जावेगी एवं उनकी तत्काल रिर्पोट दी जाकर उन्हे उपचार दिया जावेगा।

जिला मलेरिया अधिकारी द्वारा आमजन से अपील की है कि डेंगू/मलेरिया से बचाव हेतु घर के आसपास पानी जमा न होने दे। रूके हुये पानी की निकासी करे। यदि निकासी संभव न हो तो मिट्टी का तेल या जला हुआ तेल डाल दे। शाम को सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करे। घर के खिडकी दरवाजे में मच्छर रोधी जाली लगवाये, पूरी आस्तीन के कपड़े पहने। कूलर, टंकी, होज, नांद, तथा पानी के कंटेनरो की सप्ताह में एक बार सफाई अवश्य करे। बुखार आने पर मलेरिया की जांच अवश्य कराये।

सीसी टीवी कैमरे में कैद हुए नकाबपोश

140 ग्राम सोना और 60 हजार नकदी चोरी

इटारसी दोपहर मेट्रो।

शहर के सराफा बाजार में 6 और 7 जून की दरमियानी रात में दो नकाबपोशों ने पांचवी लाइन स्थित मनोज स्वर्णकार की दुकान से जेवर बनाने हेतु विभिन्न सराफा व्यवसायियों से प्राप्त लगभग 140 ग्राम सोना एवं 60000 नगदी पर हाथ साफ कर दिया है।सराफा बाजार जैसे इलाके में चोरी होना निश्चित रूप से रात्रि की पुलिस गश्त एवं सुरक्षा व्यवस्था में प्रश्न चिन्ह है? मनोज स्वर्णकार ने बताया कि पिछली वर्ष भी जून माह में उनके यहां चोरी हो गई थी किंतु आज तक चोर नहीं पकड़े हैं और यह दूसरी घटना है। वरिष्ठ अधिवक्ता रमेश के साहू ने कहा कि पांच जनपथ स्थित कार्यालय में लगे हुए कैमरे न पा शिकायत की प्रति थाना प्रभारी इटारसी और पुलिस अधीक्षक नर्मदा पुरम को भी भेज दी गई है। कैमरे में दो नकाबपोशों द्वारा ताले खोलकर चोरी की जाना दिख रही है।

जिला पुलिस कप्तान पहुंचे थे इटारसी

जिले के पुलिस कप्तान गुरुचरण सिंह एक दिन पूर्व ही अचानक रात को इटारसी पहुंचे थे, उन्होंने रात में बाजार में लगाए सभी पॉइंट चैक करें थे,और थाना प्रभारी को आवश्यक निर्देश दिए थे। इसके बाबजूद भी चोरो ने सराफा बाजार में सोने व नकदी पर हाथ साफ कर दिया।

गांधी मैदान पर आईपीएल क्रिकेट का आगाज, लग रहे चौके-छक्के

सोलह टीमें खेल रही हैं, इटारसी प्रीमियर लगी क्रिकेट प्रतियोगिता में

इटारसी। गांधी मैदान पर चौके-छक्कों पर दर्शक भरपूर आनंद उठा रहे हैं। यहां इटारसी प्रीमियर लीग (आईपीएल) क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन प्रारंभ हो गया है। नगर पालिका अध्यक्ष पंकज चौरे ने आईपीएल का शुभारंभ कराया उन्होंने टीमों से परिचय प्राप्त किया और एक ओवर बैटिंग भी करके उन्होंने भी चौके लगाये। इस अवसर पर संयोजक जितेन्द्र ओझा, अनिल राठी, कुलभूषण मिश्रा, दीप सिंह ठाकुर, राकेश दुबे, सहित वरिष्ठ क्रिकेटर, टीमों के कप्तान और खेलप्रेमी उपस्थित रहे। आईपीएल में प्रतिदिन चार मैच खेले जा रहे हैं। पहले दिन चार मैच खेले गये। पहला मैच श्री पशुपतिनाथ बुल्स और एमएम धनलक्ष्मी के मध्य खेला गया। पहले बैटिंग करते हुए पशुपतिनाथ बुल्स ने निर्धारित 8 ओवर्स में 6 विकेट के नुकसान पर 61 रन बनाये। जवाब में एमएम धनलक्ष्मी की टीम 8 ओवर में 3 विकेट खोकर केवल 58 रन ही बना सकी और मैच श्री पशुपतिनाथ बल्स ने जीत लिया। दूसरा मैच लक्ष्य नशामुक्ति केन्द्र और बवेजा प्रॉपर्टी डीलर की टीम के मध्य हुआ। मैच लक्ष्य टीम ने जीता। तीसरा मैच इंडियन फाइटर और कृति किंग्स के मध्य खेला गया जिसमें इंडियन फाइटर 3 विकेट से जीता। अंतिम मैच मैना ब्रदर्स और एसएसडी इलेवन के मध्य हुआ जिसे एसएसडी इलेवन ने 5 रन से जीता।

ऑटो चालकों की हुई बैठक, दिए आवश्यक निर्देश

इटारसी। शुक्रवार को रेस्ट हाउस में ऑटो संघ इटारसी की बैठक एसडीओपी महेंद्र सिंह चौहान तथा थाना प्रभारी गोरव सिंह बुंदेला के निर्देशों पर यातायात प्रभारी सुनील घावरी द्वारा ली गई। बैठक में नगर अध्यक्ष ऑटो संघ विक्रम डागोरे तथा ऑटो संघ के अन्य ऑटो चालक उपस्थित रहे,जिनको आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

सवारी से अवैध अधिक किराया नहीं लिया जाएगा, मुताबिक दर के किराया लिया जाएगा। रात्रि में वर्दी पहनकर तथा यातायात नियमों का पालन करते ऑटो चालन करेंगे।ऑटो स्टैंड पर ही ऑटो खड़ा करेंगे,बाजार में ऑटो नहीं ले जाएंगे, नाबालिक द्वारा ऑटो नहीं चलाए जायेंगे,शराब के नशे में ऑटो का चालन नहीं करेंगे ऑटो किराए की दर का बोर्ड ऑटो स्टैंड पर वोट अनिवार्य रूप से लगाएंगे। कोई भी संदिग्ध व्यक्ति मिलने पर पुलिस को सूचना देंगे, यातायात नियमों का पालन करेंगे अन्यथा ऑटो चालक के विरुद्ध दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा आयोजित ग्रीष्मकालीन वॉलीबॉल का प्रशिक्षण शिविर आयोजित

नर्मदापुरम। खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा ब्लॉक नर्मदापुरम में ग्रीष्मकालीन वॉलीबॉल का प्रशिक्षण शिविर शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 60 -70 बालक बालिका खिलाड़ी प्रतिदिन सुबह- शाम कोच बख्तावर खान, पूनम मंसोरिया से वॉलीबॉल का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। आज जिला खेल एवं युवा कल्याण अधिकारी उमा पटेल ने खिलाड़ियों के साथ वॉलीबॉल का अभ्यास किया, एवं खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर उनकी समस्या सुनी, इस अवसर पर संस्था की प्राचार्या श्रीमती अर्चना मिश्रा, वंदना रघुवंशी ब्लॉक समन्वयक खेल विभाग महेंद्र पचलानिया उपस्थित रहे।पुराने तालाब, कुए ,बावड़ी नाली नालो एवं नदी की सफाई एवं जिर्णोद्धार के कार्य को एक जन अभियान के रूप में करें ।

अपर्णा सराठे ने अमेरिका में कत्थक नृत्य की प्रस्तुति देकर धूम मचाई

इटारसी, दोपहर मेट्रो।

माखन नगर निवासी लघु व्यवसाय हेमंत सराठे एवं शिक्षिका सुमन सराठे की सुपुत्री और इटारसी के सेन समाज के संरक्षक एवं पूर्व अध्यक्ष समाज सेवी राकेश सेन की भांजी कुमारी अपर्णा सराठे ने कथक नृत्य में एकल नृत्य की प्रस्तुति देकर अमेरिका के कई शहरों में धूम मचा दी। उमराव जान अदा (यूएसए टूर) म्यूजिकल शो में बतौर कथक कलाकार के रूप में उन्होंने कार्य किया। नृत्यांगना अपर्णा सराठे ने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के विभिन्न शहरों अटलांटा, वॉशिंगटन डीसी, शिकागो, न्यू जर्सी,ऑरलैंडो, डलास, रैले, ह्यूस्टन, बोस्टन में अपने नृत्य की प्रस्तुति दी। अमेरिका से वापस लौटने पर मामा राकेश सेन ने इटारसी रेलवे स्टेशन पर कुमारी अपर्णा का स्वागत किया। कुमारी अपर्णा की इस उपलब्धि पर सांसद दर्शन सिंह चौधरी, विधायक डॉक्टर सीतासरन शर्मा, विधायक ठाकुर विजयपाल सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष पंकज चौरे, भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल महामंत्री राहुल चौरे, पूर्व नगर मंडल अध्यक्ष डॉ नीरज जैन, समाजसेवी प्रमोद पगारे, मनोज सारन ,सेन समाज इटारसी के अध्यक्ष आशीष सेन ने बधाई दी।

16 जून तक विशेष अभियान

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो।

नर्मदापुरम सीवरेज परियेजना के कार्यो की समीक्षा कलेक्टर सोनिया मीना के निर्देश पर डिप्टी कलेक्टर असवनराम चिरामन ने नर्मदापुरम सीवरेज परियोजना के कार्यो की समीक्षा की। श्री चिरामन द्वारा अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि एसटीपी की अप्रोच रोड के निर्माण में आने वाले मुद्दों का समाधान कर अप्रोच रोड का शीघ्र निर्माण किया जाये। रोड रेस्टोरेशन के बचे हुए कार्य भी वर्षा पूर्व किए जाये। श्री चिरामन ने कहा कि परियोजना साइट्स पर श्रमिकों की उपलब्धता पर्याप्त रहनी चाहिए। उन्होंने नगर पालिका के अधिकारियों को निर्देश दिए की पेयजल पाइप लाइन क्षतिग्रस्त होने की दशा में सप्लाई बंद कर तत्काल मरम्मत कि जाये। समीक्षा बैठक में परियोजना प्रबंधक एस.के उपाध्याय, उप परियोजना प्रबंधक चन्द्रशेखर व नगर पालिका के अधिकारी मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि नर्मदापुरम में जर्मन बैंक के एफडब्ल्यू के सहयोग से सीवरेज परियोजना का कार्य प्रगतिरत है। नगरीय विकास एवं आवास विभाग का उपक्रम मध्यप्रदेश अर्बन डेवलपमेंट कम्पनी इस कार्य को क्रियांवित कर रही है।

मेट्रो एंकर

मुख्य सचिव ने जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रगति की समीक्षा की, बारिश शुरू होते ही वृहद स्तर पर पौधारोपण किया जाए

पुराने तालाब, कुएं,बावड़ी, नालों एवं नदी की सफाई एवं जीर्णोद्धार के कार्य करें

नर्मदापुरम, दोपहर मेट्रो।

मुख्य सचिव वीरा राणा ने सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए कि वह अपने जिले में पुराने जीर्ण शीर्ण तालाब कुए बावड़ी नदी नाली नाले की सफाई एवं जिर्णोद्धार के कार्य को एक जन अभियान के रूप में करें । मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप पुराने जल स्रोत एवं स्ट्रक्चर की जानकारी हासिल कर उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए अभियान चलाएं । यह अभियान साल दर साल चलता रहे । इस दौरान किए जा रहे कार्यो की प्रतिदिन मॉनिटरिंग करें, एवं प्रतिदिन किए जाने वाले कार्यो का डॉक्यूमेंटेशन अनिवार्य रूप से करें । जल जीवन मिशन को सफल बनाएं । उल्लेखनीय है कि मुख्य सचिव वीरा राणा ने शुक्रवार को जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रगति की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षा की। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उन्होंने सभी कलेक्टर को निर्देश दिए की बारिश शुरू होते ही नदियों के आसपास एवं सभी जगह वृहद स्तर पर पौधारोपण के कार्यक्रम शुरू किये जाएं । बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया जाए । उन्होंने सभी कलेक्टर को यह भी निर्देश दिए की बाढ़ प्रभावित गांवों एवं स्थान को वह अभी से चिन्हित करे एवं वहां के लोगों के रुकने की वैकल्पिक स?थान एवं व?यवस?था अभी से सुनिश्चित करें ।

मुख्य सचिव ने जल गंगा संवर्धन के तहत किया जा रहे जल जीवन मिशन के कार्यो कार्यो की विस्तार से जानकारी देते हुए सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए की तालाब गहरीकरण के समय मिट्टी एवं गाद निकलती है। यह मिट्टी एवं गाद बहुत उपजाऊ होती है इसलिए आसपास के किसानों को यह उपलब्ध कराए। उन्होंने कहा कि जल संरचनाओं के आसपास यदि कहीं अतिक्रमण है तो उसे प्राथमिकता से हटाए और वहां पर पौधारोपण मनरेगा के अंतर्गत करें , एवं स्व सहायता समूह , जनप्रतिनिधियों , आम जनता को अनिवार्य रूप से इस अभियान में शामिल करें । अभियान की फोटोग्राफी एवं डॉक्युमेंट्री अवश्य की जाए ।

मुख?य सचिव ने कहा कि अभियान के अंतिम दिन 16 जून को गंगा दशहरा है, इस दिन नदी घाटों में विशेष रूप से साफ सफाई का अभियान चलाएं । मंदिरों में भी साफ सफाई की जाए। उन्होंने कहा कि

अभी भी यह अभियान सतत अभियान का रूप नहीं लिया है , अब आवश्यकता है कि हम इसे भव्य और बड़े पैमाने पर आयोजित करें और सभी लोगों को इस अभियान से जोडे। इस अभियान के तहत जल संरचनाओं को पुनर्जीवित करें । उन्होंने कहा कि जन अभियान परिषद का भी इस अभियान में सहयोग ले । मुख्य सचिव ने निर्देश दिए की जन अभियान के दौरान किए जाने वाले कार्यो की एवं उसके बाद किए गए कार्यो की फोटोग्राफी अनिवार्य रूप से करें। अभियान में धार्मिक संस्थाओं, लायंस क्लब एवं सभी इच्छुक व्यक्तियों को शामिल करें । गंगा दशहरा के दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएं। सभी जिले विशेष तैयारी कर गंगा दशहरा का कार्यक्रम आयोजित करें । अभियान के दौरान संगोष्ठी , चौपाल का आयोजन अनिवार्य रूप से करें।मुख्य सचिव ने कहा कि जल संवर्धन के कार्य के लिए जल संस्थाओं को कार्य सोपा गया है । वह कलेक्टर के मार्गदर्शन में कार्य करेंगे । बताया गया कि पौधारोपण कार्यक्रम के तहत पूरे प्रदेश में 5 करोड़ 39 लाख पौधे लगाए जाएंगे । वन विभाग की नर्सरी में सभी पौधे तैयार कर लिए गए हैं । बताया गया कि कोई भी व्यक्ति मामूली सी दर पर पौधे खरीद सकता है। बताया गया कि सभी नगरी निकायों में नगर वन या स्मृति वन बनाए जाएंगे जहां पर आरोपित पौधे किए जाएंगे । मुख्य सचिव ने सभी कलेक्टर को निर्देश दिए कि जहां पर पुल पुलिया जर्जर होकर गिरने के कगार पर है वहां पर आम जनता के लिए वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित किया जाए । ऐसे जर्जर पुल पुलियों पर मार्किंग हो और निकलने के लिए संकेतक बनाए जाएं । उन्होंने कहा कि सभी कलेक्टर यह तैयारी अवश्य रखें की बाढ़ आने पर नदी एवं नदी के आसपास के गांव जो प्रभावित हो रहे हैं वहां के लोगो को अन्यंत्र शिफ्ट करें । पहले से ही सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के उन्होंने निर्देश दिए । बताया गया कि मौसम विभाग के अनुसार बारिश जल्दी एवं ज्यादा होने की संभावना है । ऐसी स्थिति में सभी जिलों में खाद एवं बीज की कोई कमी परिलक्षित ना हो । मुख्य सचिव ने स्वास्थ्य संस्थानों में आवश्यक उपचार की एवं दवाइयो की व्यवस्था पर्याप्त मात्रा में करने के निर्देश दिए और कहां की यदि कोई दुर्घटना होती है तो प्राथमिकता से मरीज की जांच की जाए । पीएचसी एवं सीएचसी में सभी दवाइयां रहे । फील्ड स्टाफ भी अपने कार्य स्थल पर मौजूद रहे । आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को भी छोटी-छोटी बीमारियों में दवाई देने की ट्रेनिंग करवाई जाए। मुख्य सचिव ने कहा कि इस मौसम में डॉग बाइट के कैस भी ज्यादा आ रहे हैं तो इसे भी अनिवार्य रूप से देखा जाए । उन्होंने कहा कि भारी बारिश में बड़े डेमो में लीकेज की समस्या होती है । गेट खोलने की भी नौबत आती है ।

भाजपा नेता श्वेता त्यागी के जन्मदिन पर भोजन वितरण और पौधारोपण

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

प्रदेश कार्यालय मंत्री भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा मध्यप्रदेश श्वेता आनन्द त्यागी के जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया गया जिसमे रावजी पथ पर ओर ब्रह्मचारिणी सेवा समिति वृद्ध आश्रम में भोजन बांटा गया। साथ ही केडीबीएम में मंदिर में पूजन की गई।केडीबीएम परिवार ने डायरेक्टर श्वेता आनंद त्यागी जी को शुभकामनाएं दी इसके साथ पौधारोपण कर जन्मदिन पर पर्यावरण सरंक्षण का संदेश दिया। पर्यावरण प्रेमी श्वेता आनंद त्यागी ने कहा कि में अपने जन्मदिन पर हर साल में पौधरोपण करती हूँ। हम सभी को पौधारोपण और पर्यावरण संरक्षण को अपनी आदत बनाना चाहिए ताकि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक स्वच्छ वातावरण दे सकें। पौधारोपण आज के समय की मुख्य जरूरत है और हम सभी को पर्यावरण संरक्षण को अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए । मेरा भी आप सभी से अनुरोध है कि आप भी अपने जन्मदिन पर एक पौधा जरूर लगाएं।

कमीशन को लेकर पीडीएस विक्रेता संघ ने,एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

शुक्रवार को पीडीएस विक्रेता संघ के सेल्समैनों ने अनुविभागीय अधिकारी को ज्ञापन देते हुए संघ के अध्यक्ष जोगेन्द्र सिंह चौहान ने कहा कि तहसील में संचालित शासकीय उचित मूल्य की दुकानों का माह जनवरी 2024 से मई 2024 का कमीशन सेल्समैनों को नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि जिससे समिति प्रबंधक एवं सेल्समेनों को वेतन प्राप्त नहीं हुआ है। जिससे की परिवार का भरण पोषण गोदड़ाकमों का किराया एवं तुलावटों की मजदूरी सेल्समेन देने में असमर्थ हैं। सभी सेल्समैनों ने जनवरी से मई 5 माह का तक का कमीशन दिलवाने की मांग की है। इस दौरान बड़ी संख्या में समिति प्रबंधक और सेल्समेन मौजूद रहे।

लिंक रोड के दोनों तरफ बनेगी नाली, एसडीएम ने खड़े होकर करवाया लेआउट

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

लिंक रोड की सड़क का निर्माण तो बड़ी मुश्किल से हुआ है । सड़क के दोनों और नालियों का निर्माण नहीं होने के कारण बरसात के दिनों में आसपास के रहवासियों और दुकानदारों की परेशानी को दृष्टिगत रखते हुए ।शुक्रवार को एसडीएम हर्षल चौधरी ने नगर पालिका इंजीनियर और ठेकेदार को मौके पर बुलाकर नाली निर्माण का लेआउट दिलाते हुए कहा कि कार्य को तत्काल प्रारंभ करके प्राथमिकता से करवाया जाए इस काम में किसी भी तरह की लापरवाही नहीं होनी चाहिए सड़क बनने के बाद नालियों का निर्माण नाली निर्माण नहीं होने के कारण बारिश के दिनों में बहुत ज्यादा परेशानी होगी क्योंकि पानी निकासी के लिए कोई इंतजाम नहीं है। आचर संहिता हटते ही इसको गंभीरतापूर्वक करवाने एसडीएम मौके पर पहुंच कर जाया जा लिया काम को धरातल पर शीघ्र पूर्ण करने के दिशा निर्देश दिए हैं। वहीं देखना है की कितनी जल्दी सड़क के दोनों और नालियों का निर्माण हो पाएगा या फिर बरसात के दिनों में आसपास के रहवासियों तथा दुकानदारों को मुश्किलों के सामना करना पड़े।

2 साल के बाद हम्मालों की मजदूरी बढ़ाई,मंडी की बैठक में हुआ निर्णय

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

शुक्रवार को कृषि उपज मंडी की विभिन्न समस्याओं को लेकर एसडीएम हर्षल चौधरी की मौजूदगी में बैठक हुई जिसमें हम्म्ल तुलावत ,व्यापारी किसान प्रतिनिधि, एवं मंडी के अधिकारी कर्मचारियों की मौजूदगी में एसडीएम की अध्यक्षता में बैठक हुई इसमें जो भी सुझाव दिए गए हैं ।उन पर विचार करके मंडी विकास तथा किसानों के हित जो भी जरूरी कदम उठाए जा सकते हैं उन पर अमल करने की बात कही दो साल बाद हम्म्लो की मजदूरी दर भी वृद्धि करने के प्रस्ताव को पास किया गया। वहीं बैठक भाजपा नेता संतोष चौरे, पूर्व जनपद अध्यक्ष जितेंद्र बघेल,नगर मंडल अध्यक्ष पारस तारण, चरण सिंह राजपूत तथा किसान नेता सुरेंद्र रघुवंशी ने भी किसाने हित में मंडी में विभिन्न समस्याओं को रखकर सुधार करने की बात रखते हुए कहा कि सबसे जरूरी कदम किसानों के हित में मंडी को शहर से बाहर किया जाए मंडी में आने वाले किसानों को उचित व्यवस्था कराई जाए साफ सफाई से लेकर पानी के इंतजाम होना चोरी करने वालों पर कड़ी कार्रवाई हो उसको रोकने के लिए कैमरों की वृद्धि की जाए मंडी में कर्मचारियों की वृद्धि की जाए ।थोक अनाज तिलहन संघ अध्यक्ष समीर भार्गवा ने मंडी की साफ सफाई करने के लिए टेंडर लगाकर कर्मचारी तैनात करने की बात रखी पानी के लिए विशेष इंतजाम किए जाएं स्टाफ की कमी दूर की जाए व्यापारियों को होने वाली समस्याओं को भी उनके द्वारा रखा गया हम्म्ल तुलावटों ने भी अपनी बात रखते हुए कहा कि कई वर्षों से हमारी तुलाई की दर नहीं बढ़ाई गई है। जिसको 2 साल के बाद सभी की सहमति से बढ़ाने का निर्णय लिया गया इसके अलावा फसल चोरी रोकने के साथ सीसीटीवी कैमरे बढ़ाने के अलावा पांच रुपए में किसानों को भोजन उपलब्ध करने की प्रक्रिया आगे भी जारी रहेगी किसाने के लिए किए गए कामों की जानकारी मंडी के स्टाफ के द्वारा दी गई। इसके अलावा जल्दी ही कृषि उपज मंडी को नगर से बाहर करने की प्रक्रिया को भी तेजी से बढ़ाने पर सभी ने सहमति दी। एसडीएम ने बताया कि सभी ने बैठक में जो जो सुझाव दिए हैं उन सब पर बिंदु चर्चा की जा रही है मंडी के हित में कौन से काम किया सकते हैं। किसानों को किसी भी तरह की परेशानी ना हो उसके लिए हम सभी जरूरी खत्म उठा रहे हैं मंडी में चोरी रोकने के लिए भी लगातार कार्रवाई की जा रही है। आवश्यकता के अनुसार सीसीटीवी कैमरा में वृद्धि की जा रही है। इलेक्ट्रॉनिक तोल कांटों पर फसल तुलाई का कार्य किया जा रहा है। कृषि उपज मंडी को नगर से बाहर करने की प्रक्रिया पहले से ही चल रही है। उसको हम और भी गति से आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे जल्दी ही उचित स्थान पर प्रस्तावित करवाने का प्रयास किया जा रहा है। व्यापारियों की समस्याओं को भी दूर करने काम हम लगातार कर रहे हैं। हम्म्ल यूनियन की मांग पर 2 साल के बाद मजदूरी बढ़ाने का निर्णय भी सबकी सहमति से लिया गया है।

जल्दी ही मंडी हो सकती है शहर बाहर

मंडी कब होगी शहर से बाहर 10 सालों से चल रही है फाइल

वैसे तो मंडी को शहर से बाहर करने की प्रक्रिया विगत 10 वर्षों से अधिक समय से चल रही है। परंतु अभी तक या काम धरातल पर नहीं हो पाया है इसीलिए जनप्रतिनिधियों तथा प्रशासन को मिलकर किसाने के लाभ के लिए जल्दी से जल्दी कृषि उपज मंडी को शहर से बाहर करने की कार्रवाई करनी चाहिए अभी मंडी बीच शहर में संचालित होने के कारण किसानों के साथ नगर वासियों और बाहर आने जाने वाले वाहन चालकों को भी परेशानी होती है ।सीजन में तो यहां से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है क्योंकि मुख्य शहरों को जाने वाला रास्ता मंडी से ही होकर गुजरता है इस वजह से दोपहर 12 से लेकर शाम 6 बजे तक यहां से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। इसकी जानकारी नीचे से लेकर ऊपर तक के अधिकारियों को है। इसके बाद भी तेज गति से इस काम को नहीं करवाया जा रहा है। क्षेत्रीय विधायक उमाकांत शर्मा जरूर मंडी को जल्द ही दूसरी जगह ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। अब देखना है की कितनी जल्दी कृषि उपज मंडी नगर से बाहर होगी। वहीं करवाई कागजों में जरूर पिछले 10 वर्षों से चल रही है पर धरातल पर मूर्ति रूप कब लगी यह कह पाना संभव नहीं है।

पार्किंग नहीं होने से बैंकों के सामने लग रहा वाहनों का जमावाड़ा

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

शहर की इक्का-दुक्का बैंक को छोड़कर किसी भी शाखा में वाहन पार्किंग की व्यवस्था नहीं है। ऐसे में बैंक शाखाओं में पहुंचने वाले ग्राहक अपनी मनमर्जी से सड़कों पर ही अपने वाहन खड़े कर देते है। जिन्हें बैंक के सुरक्षाकर्मी की ओर से भी व्यस्थित तरीके से नहीं खड़ा कराया जाता है। इससे सड़क से गुजरने वाले अन्य वाहन चालकों एवं पैदल राहगीरों को आवागमन में खासी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वहीं हादसे की आशंका भी बनी रहती है। मंडी बायपास रोड,लिंक रोड,नया बस स्टेण्ड,पॉलीवाल कॉलोनी में स्थित बैंक शाखाओं के सामने मार्ग पर दिनभर वाहनों का जमावड़ा लगा रहता है। इससे बार-बार जाम की स्थिति बनती है। जिस पर न तो बैंक के अधिकारी कर्मचारी ध्यान देते है और न ही पुलिस प्रशासन एवं नगर पालिका की ओर से संबंधितों के खिलाफ किसी भी प्रकार की कार्रवाई की जाती। जागरूक नागरिको का कहना है कि कई बैंक की शाखाएं किराए के मकान एवं दुकानों में संचालित हो रही है। जहां वाहनों को खड़ा करने के लिए कोई इंतजाम नहीं है। ऐसे में बैंक शाखाओं की ओर से वाहन पार्किंग की व्यवस्सथा की जाना चाहिए। जिससे कि लोगो के होने वाली परेशानियों से निजात मिल सके।

सबसे ज्यादा यहां होती है दिक्कत – नगर के मंडी गेट पर करीब दर्जनभर से अधिक बैंके संचालित है,लेकिन किसी भी बैंक के पास वाहन पार्किंग की व्यवस्था नहीं है। जिसके चलते यहां दिनभर जाम जैसे हालत बने रहते है। इससे किसान व्यापारी सहित वाहन संचालको को घंटो तक जाम में फंसना पड़ता है।

सीमांकन के बदले में 20हजार मांगने वाले पटवारी शुभम पटेल को, एसडीएम ने किया निलंबित

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

सीमांकन करने के लिए झंडाव के किसान भूपेंद्र सिंह दांगी से 20000 की मांग करने वाले भ्रष्टाचारी पटवारी पर एसडीएम ने कड़ी कार्रवाई करते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। दोपहर मेट्रो के द्वारा सीमांकन करने की एवाज में 20000 मांगने का किसान और पटवारी का ऑडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल हुआ था किसान ने लिखित में शिकायत एसडीएम से करते हुए कहा था कि सीमांकन करने के बदले में पटवारी हल्का नंबर 50 शुभम पटेल के द्वारा 25 बीघा के लिए 20000 की मांग की गई थी। जिसका ऑडियो भी वायरल हुआ था वायरल ऑडियो के आधार पर एसडीएम हर्षल चौधरी ने हल्का पटवारी शुभम पटेल को कारण बताओ नोटिस जारी करके तीन दिवस में जवाब देने के लिए समय दिया था समय अवधि बीत जाने के बाद भी पटवारी के द्वारा कोई जवाब नहीं दिया इसके बाद एसडीएम ने शुक्रवार को आगे कार्रवाई करते हुए हल्का पटवारी 50 शुभम पटेल हल्का 50 को शासकीय कार्य में लापरवाही अपने कर्तव्य के प्रति गंभीर नहीं होना विधि तथा कर्तव्यों के विपरीत कार्य करने पर तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। निलंबित अवधि में इनको जीवन ज्ञापन भत्ता दिया जाएगा निलंबित समय में इनका मुख्यालय भी तहसील कार्यालय सिरोंज रहेगा । दोपहर मेट्रो के द्वारा लगातार किसानों के हित में सीमाकंन के बदले में खुलेआम भ्रष्टाचार करने की खबर को प्रमुखता से प्रकाशित किया जा रहा था। इसके बाद एसडीएम ने वायरल ऑडियो तथा दोपहर मेट्रो की खबर को संज्ञान में लेकर हल्का पटवारी तथा आर आई को नोटिस जारी करके जवाब मांगा था पटवारी ने जवाब देना उचित नहीं समझा इसके बाद एसडीएम ने आगे कार्रवाई करते हुए पटवारी को निलंबित कर दिया है। किसान के द्वारा आर आई की भी शिकायत की गई है।

इनका कहना है।

सीमांकन के बदले में किसान से पैसे मांगने का ऑडियो सामने आने के बाद हमने पटवारी को नोटिस देकर 3 दिन में जवाब मांगा था पर उक्त समय बीत जाने के बाद भी पटवारी ना तो उपस्थित हुआ ना ही कोई जवाब दिया इसलिए पटवारी हल्का 50 शुभम पटेल को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

***हर्षल चौधरी** एसडीएम*

मेट्रो एंकर | **कार्रवाई के बाद भी नहीं सुधर रहे कई पटवारी**

जगथर के सरपंच ने एसडीएम से की शिकायत, पटवारी पीएम जन मन के पत्रों को नहीं दे रहा प्रमाण पत्र

सिरोंज, दोपहर मेट्रो।

सरकार के द्वारा आदिवासी परिवार जनों शासन की विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए उनके संपूर्ण दस्तावेज तैयार करने के लिए पीएम जनमन योजना के तहत अभियान चलाकर सभी जरूरी दस्तावेज बनाकर इन्हें बनाकर शासन की योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए पीएम जनमन योजना प्रारंभ की गई है ।इस योजना के अंतर्गत बड़ी संख्या में लोगों ने आवेदन भी किए हुए हैं दूसरी ओर एसडीएम ने इस अभियान के तहत तेजी से काम करवाने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना का काम भी पहल विकासखंड में करवाया है। दूसरी ओर कुछ पटवारियों के द्वारा इस योजना के अंतर्गत काम करने में लापरवाही की जा रही है ।इसी तरह की एक शिकायत जगथर पंचायत की सरपंच बिशन बाई ने एसडीएम को आवेदन देते हुए कहा कि पीएम जनमन अभियान के अंतर्गत जितने भी पात्र लोगों ने आवेदन किए थे ।वह कई महीनो से प्रमाण पत्र के लिए चक्कर लगा रहा है पर पटवारी आशीष अहिरवार के द्वारा प्रमाण पत्र बनाकर नहीं दिए जा रहे उल्टा परेशान करने का काम किया जा रहा है इस वजह से यह लोग परेशान हो रहे हैं। इन्हें लोगों को शासन की योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। पटवारी निर्देशित करके शीघ्र ही पात्र लोगों को जनमन योजना के अंतर्गत प्रमाण पत्र दिलवाने की कार्रवाई करें इसके बाद एसडीएम ने तत्काल मामले को संज्ञान में लेते हुए पटवारी को सभी पात्र हितग्राहियों के प्रमाण प्रमाण पत्र देकर शासन की योजना से लाभान्वित करवाने के निर्देश दिए हैं ।यदि इस काम में किसी भी तरह की लापरवाही की गई तो कड़ी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई है ।दूसरी ओर लगातार सीमांकन से लेकर किसानों के काम में लापरवाही को लेकर कलेक्टर भी नाराजगी जाहिर कर चुके हैं। इसके बाद भी कई पटवारी के काम में परिवर्तन नहीं हो रहा लगातार शिकायत है सामने आ रही है किसान सीमांकन करवाने के लिए भटक रहे हैं। राजस्व के मामलों की समीक्षा करने के लिए आज तहसीलदार संजय चौरसिया के द्वारा आज एक बैठक भी पटवारी की आयोजित किया जिसमें सीमांकन से लेकर किसानों के काम तत्काल करने के निर्देश दिए जाएंगे काम का नहीं करने वाले पटवारी पर ठोस कार्रवाई करने के लिए चेताया जा सकता है।

इनका कहना है

तत्काल पटवारी को पीएम जनमन योजना के अंतर्गत प्रमाण पत्र देने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही राजस्व मामलों की समीक्षा करने के लिए पटवारी की आज एक बैठक भी ली जाएगी तेज गति से किसानों के काम करवाए जाएंगे, लापरवाही से कार्य करने वालों पर कार्रवाई भी की जा रही है।

***हर्षल चौधरी** एसडीएम सिरोंज*

नगर में धूमधाम से मनाई गई शनि जयंती श्रद्धालुओं ने तेल व काली उड़द से किया शनि देव का अभिषेक

सिरोंज। नगर में गुरूवार को शनि जयंती धूमधाम से मनाई गई। सुबह से ही तहसील रोड स्थित प्राचीन शंनि मंदिर में सुबह 6 बजें से ही श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला प्रारंभ हुआ जो की देर रात्रि तक जारी रहा। इस दौरान श्रद्धालुओं ने शनि देव की प्रतिमा पर तेल,तिल काली उड़द से अभिषेक किया। शनि मंदिर के पुजारी राजेन्द्र प्रसाद जोशी ने बताया कि इस तरह पूजन करने से शनि देव की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

फुटबॉल: फ्रांस ने लक्जमबर्ग को 3-0 से दी मात

मेट्ज, एजेंसी

फ्रांस ने प्री यूरो 2024 के दोस्ताना मैच में लक्जमबर्ग को 3-0 से मात दी। फ्रांस के कप्तान किलिएन एम्बाप्पे ने मैच में एक गोल दागा और इसे अपने दिवंगत अंकल एलेक्स को समर्पित किया। उन्होंने अंकल की तस्वीर वाली टी-शर्ट पहनी हुई थी। लक्जमबर्ग के खिलाफ गोल करने के बाद एम्बाप्पे ने दोनों हाथ ऊपर उठाकर अपने अंकल को याद किया, जिनका हाल में निधन हो गया था। सर्वाधिक गोल करने वाले तीसरे फ्रांसीसी खिलाड़ी: एम्बाप्पे ने फ्रांस के लिए 78वें मैच में 47वां गोल दागा। वह राष्ट्रीय टीम की ओर से सर्वाधिक गोल करने वाले तीसरे खिलाड़ी हैं। इस सूची में ओलिवर गिरौड सर्वाधिक 57 गोल (131 मैच) के साथ पहले, जबकि थियरी हेनरी 51 गोल (123 मैच) संग दूसरे नंबर पर हैं।

रोनेक्स किप्रुटो पर 6 साल का बैन

मोनाको, एजेंसी

10 किलोमीटर रोड रेस के केन्याई विश्व रेकॉर्ड धारक रोनेक्स किप्रुटो को उनके एथलीट बायोलॉजिकल पासपोर्ट में अनियमितताएं पाए जाने की वजह से छह साल के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया है। उन पर मई 2029 तक प्रतिबंध लागू रहेगा। डोपिंग रोधी नियमों का उल्लंघन करने के लिए उन्हें 11 मई 2023 को अस्थायी रूप से निलंबित किया गया था।

दो विकेट से मुकाबला जीता; श्रीलंका की लगातार दूसरी हार

टी-20 वर्ल्ड कप में बांग्लादेश ने श्रीलंका को पहली बार हराया

नईदिल्ली, एजेंसी

टी-20 विश्व कप 2024 के 15वें मुकाबले में बांग्लादेश क्रिकेट टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए श्रीलंका क्रिकेट टीम को 2 विकेट से हरा दिया। यह इस टूर्नामेंट में श्रीलंका की लगातार दूसरी हार है। पहले मुकाबले में वनिंदु हसरंगा की टीम को दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट टीम के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। इसी तरह बांग्लादेश ने जीत के साथ अपने विश्व कप अभियान का आगाज किया है।
आइए मैच में बने रिकॉर्ड्स पर एक नजर डालते हैं।
बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। उनका यह फैसला सही साबित हुआ और श्रीलंका को शुरुआती झटके लगे।

पथुम निसांका (47) को छोड़कर श्रीलंका का कोई भी बल्लेबाज कमाल नहीं दिखा पाया। 20 ओवर में 9 विकेट खोकर श्रीलंका ने 124 रन बनाए। मुस्तफिजुर रहमान और रिशाद हुसैन ने 3-3 विकेट झटके। बांग्लादेश को भी शुरुआती झटके लगे, लेकिन लिटन दास (40) और तौहीद हृदोय (36) की पारियों के चलते बांग्लादेश को जीत मिल गई।

श्रीलंका ने बांग्लादेश के खिलाफ 20 ओवर में नौ विकेट गंवाकर 124 रन बनाए। टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत दमदार हुई थी। हालांकि, टीम के सलामी बल्लेबाज इसे ज्यादा देर तक जारी नहीं रख सके। तस्किन अहमद ने 21 रन के स्कोर पर श्रीलंका को पहला झटका कुसल मेंडिस के रूप में दिया। इसके बाद विकेटों की झड़ी सी लग गई। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए उतरे कामिंदु मेंडिस सिर्फ चार रन बनाकर आउट हो गए। एक छोर पर पथुम निसंका कमान संभाल हुए थे तो दूसरी तरफ विकेटों के गिरने का सिलसिला जारी था।

नुवान तुषारा ने की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी

श्रीलंका के तेज गेंदबाज नुवान तुषारा ने 4 ओवर में 18 रन देकर 4 विकेट झटके। उनकी इकॉनमी रेट 4.50 की रही। यह उनके टी-20 अंतरराष्ट्रीयर करियर की सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी प्रदर्शन है। इस शानदार प्रदर्शन के बावजूद श्रीलंका को मुकाबले में जीत नहीं मिल पाई।

रिशाद हुसैन ने हासिल की उपलब्धि

बांग्लादेश के रिशाद टी-20 विश्व कप में 3 विकेट हॉल लेने वाले दूसरे सबसे युवा स्पिन (21 साल 328 दिन) गेंदबाज बने हैं। उन्होंने मेंहदी हसन को पीछे छोड़ा है। हसन ने साल 2021 में स्कॉटलैंड के खिलाफ 3 विकेट लिए थे। तब उनकी उम्र 26 साल और 309 दिन थी। पहले स्थान शाकिब अल हसन हैं। उन्होंने साल 2007 में 20 साल और 173 दिन की उम्र में वेस्टइंडीज के खिलाफ 3 विकेट हॉल अपने नाम किए थे।

बांग्लादेश के गेंदबाजों ने किया कमाल

बांग्लादेश के लिए रहमान ने 4 ओवर में 17 रन खर्च किए और 3 बल्लेबाजों को शिकार बनाया। उनकी इकॉनमी सिर्फ 4.20 की रही। हुसैन ने 4 ओवर में 22 रन खर्च करते हुए 3 विकेट झटके। उनकी इकॉनमी रेट 5.50 की रही। इन दोनों के अलावा तस्कीन अहमद ने भी 2 विकेट अपने नाम किए और 4 ओवर में केवल 25 रन दिए। तंजीम हसन साकिब के खाते में भी 1 सफलता आई और उन्होंने 24 रन खर्च किए।

हसरंगा के नाम आया ये अनचाहा रिकॉर्ड

हसरंगा टी-20 विश्व कप 2024 के लगातार दूसरे मुकाबले में खाता खोले बिना पवेलियन लौट गए। इसी के साथ उनके नाम एक अनचाहा रिकॉर्ड दर्ज हो गया। वह संयुक्त रूप से चौथे कप्तान बने हैं, जिन्होंने टी-20 विश्व कप में सबसे ज्यादा बार खाता खोले बिना पवेलियन लौटे हैं। उनसे पहले आरोन फिंच, इयोन मोर्गन और विलियम पोर्टरफील्ड ऐसे कप्तान रहे हैं, जिन्होंने इस टूर्नामेंट में 2 बार शून्य के स्कोर पर आउट हुए हैं।

इंडोनेशिया ओपन: भारतीय शटलर की जापानी खिलाड़ी पर दूसरी जीत, केंटा को हराकर लक्ष्य सेन अंतिम 8 में

जकार्ता, एजेंसी

भारतीय शटलर लक्ष्य सेन ने इंडोनेशिया ओपन बैडमिंटन के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। लक्ष्य ने अंतिम-16 में जापान के केंटा निशिमोतो को 21-9, 21-15 शिकस्त दी। यह केंटा पर उनकी तीन मैचों में दूसरी जीत है। अब लक्ष्य सेन का सामना डेनमार्क के 27 वर्षीय एंडर्स एंटोनसेन से होगा, जिन्होंने क्वार्टरफाइनल में थाइलैंड के कंताफोन वांगचारोन को 21-17-21-11 से हराया। लक्ष्य सेन ने अब तक तीन बार एंटोनसन से मुकाबला खेला है। इसमें एक जीता और तीन में उन्हें हार मिली है।

निशानेबाजी: सरबजोत ने 10मी एयर पिस्टल में जीता गोल्ड

म्यूनिख विश्व कप में भारत को मिला पहला स्वर्ण पदक

म्यूनिख. एजेंसी

सरबजोत सिंह ने आइएसएसएफ विश्व कप की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीत भारत का खाता खोला। 22 वर्षीय भारतीय निशानेबाज ने आठ खिलाड़ियों के फाइनल में 242.7 का स्कोर कर स्वर्ण जीता। चीन के बू शुआई हांग ने 0.2 अंक से पीछे रहते हुए रजत और जर्मनी के रोबिन वाल्टर ने कांस्य मिला। विश्व कप में सरबजोत का यह दूसरा व्यक्तिगत स्वर्ण पदक है।

महिलाओं में सिफ्त कौर फाइनल में

महिलाओं की 50 मीटर राइफल 3-पोजीशन स्पर्धा में एशियाई खेलों की स्वर्ण पदक विजेता सिफ्त कौर सामरा ने 593 का स्कोर बनाकर फाइनल में जगह बनाई। वहीं, महिलाओं की एयर पिस्टल स्पर्धा में रिदम सांगवान ने निराश किया और वह 575 अंकों संग 17वें स्थान पर रहीं।

युवा भारतीय निशानेबाज ने शुरुआती पांच शॉट में तीन बार 10 से अधिक अंक जुटाकर शुरुआती बढ़त बनाई। सरबजोत ने लगातार अच्छी निशानेबाजी की और 14वें शाट से पहले तक बढ़त बरकरार रखी, जब वाल्टर ने उनकी बराबरी कर ली। सरबजोत ने 15वें शॉट में 10.8 अंक के साथ अपना दावा मजबूत किया जबकि वाल्टर 8.6 अंक ही जुटा पाए। पांचवें नंबर पर झेंग के बाहर होने के बाद वाल्टर ने डिकेक को पछाड़कर कांस्य पदक जीता।

मनोरंजन **बॉलीवुड का कोना**

ऐश्वर्या, प्रियंका के क्लब में अनन्या पांडे शामिल डिज्नी के मशहूर किरदार राइली की बनी आवाज

डिज्नी की फिल्मों के किरदारों को देखते हुए बड़ी हुई अभिनेत्री अनन्या पांडे के लिए मुंबई में आयोजित डिज्नी की ही फिल्म 'इनसाइड आउट 2' का स्पेशल ट्रेलर लॉन्च इवेंट ढेर सारी सुनहरी यादों को फिर से जीने का दिन बनकर आया। 'सिम्बा' और 'स्कार' को अपने पसंदीदा एनीमेशन किरदार बताने वाली अनन्या ने ये भी जाहिर किया कि कैसे वह अपने पालतू कुत्ते का मल-मूत्र खुद साफ करती हैं। डिज्नी की फिल्मों में हिंदी सिनेमा के प्रतिष्ठित कलाकारों की आवाजें इस्तेमाल करने का लंबा सिलसिला रहा है और अब अनन्या पांडे भी ऐश्वर्या राय बच्चन और प्रियंका चोपड़ा जैसे उन कलाकारों की फेहरिस्त में शामिल हो गई जिन्होंने डिज्नी की फिल्मों में अपनी आवाजें दी हैं। साल 2015 में रिलीज हुई फिल्म 'इनसाइड आउट' की सीक्वल 'इनसाइड आउट 2' उस राइली की कहानी है जो अब बड़ी हो चुकी है। उसके भीतर की भावनाएं उमड़ रही हैं और दिक्कत तब सामने आती है जब इन भावनाओं और एहसासों की खिचड़ी से दिमाग में पकने लगती है। अनन्या कहती हैं, 'इस वक्त भी मेरे मन में तमाम सारी भावनाएं एक साथ आ रही हैं। अभी जब मैं यहां आ रही थी तो थियेटर के बाहर मेरे पैर लड़खड़ाए और मुझे सहारा लेना पड़ा तो यह मेरे लिए मेरे मन में संकोच आने का पल था।' ये पूछे जाने पर कि ईर्ष्या के भाव भी क्या हाल फिलहाल में उनके मन में आए हैं? अनन्या बताती हैं, 'अभी बीते दिन ही वह अपने दोस्तों के साथ थी। अपने वजन का ख्याल रखने के लिए उनका खानपान बहुत नियंत्रित है लेकिन अपने दोस्तों को बटर चिकन खाते देखकर उन्हें बहुत ईर्ष्या हो रही थी। ऊपर से जब महकता हुआ हलवा मेज पर आया और जिस तरह से उनके दोस्तों ने इसका आनंद लिया, वह पल बहुत ही ईर्ष्या जगाने वाला था।' डिज्नी स्टार के हेड ऑफ स्टूडियोज बिक्रम दुग्गल ने इस मौके पर डिज्नी की उस परंपरा को याद किया जिसमें हॉलीवुड में बनी फिल्मों को स्थानीय स्पर्श देने के लिए हिंदी सिनेमा के बेहतरीन कलाकारों के साथ इन फिल्मों ने जुगलबंदी की है। प्रियंका चोपड़ा और ऐश्वर्या राय बच्चन को याद करते हुए बिक्रम ने कहा कि जब फिल्म 'इनसाइड आउट 2' में राइली के किरदार को आज देने के लिए किसी एक हिंदी फिल्म सितारे को चुनने की चर्चा चली तो सबने एकमत से अनन्या पांडे के नाम पर ही मुहर लगाई। अनन्या पांडे की किशोरवय छवि और उनकी ऊर्जावान शख्सियत को राइली के किरदार की आवाज के लिए बिल्कुल सही बताते हुए बिक्रम दुग्गल ने उम्मीद जाहिर की कि पहली 'इनसाइड आउट' की तरह इसकी सीक्वल को भी भारतीय दर्शकों खासकर बच्चों का भरपूर प्यार मिलेगा।

चराग को डेब्यू फिल्म में मिला कंगना का सहारा

अभिनेत्री कंगना रणौत ने बॉलीवुड इंडस्ट्री में अपना दमखम दिखाने के बाद राजनीति की तरफ रुख कर लिया है। भाजपा ने कंगना को हिमाचल प्रदेश के मंडी से चुनाव में उतारा। चुनाव में जीत हासिल कर कंगना मंडी की सांसद बन गई हैं। ऐसे में अब कंगना का राजनीति से जुड़े लोगों से मिलना जुलना लगा ही रहेगा। हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मंडी निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा सांसद कंगना रणौत से लोक जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष चिराग पासवान ने संसद परिसर में मुलाकात की है। दोनों सितारे इससे पहले एक फिल्म में भी साथ काम कर चुके हैं। कंगना रणौत और चिराग पासवान ने फिल्म 'मिले ना मिले हम' में साथ में स्क्रीन साझा की थी। तनवीर खान के निर्देशन में बनी ये फिल्म 4 नवंबर 2011 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी। कंगना और चिराग फिल्म में अहम भूमिका में दिखाई दिए थे। हालांकि, ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखाई पाई थी। दर्शकों को 'मिले ना मिले हम' कुछ खास पसंद नहीं आई थी। 'मिले ना मिले हम' में चिराग पासवान ने चिराग मेहरा और कंगना रणौत ने अनिष्का श्रीवास्तव की भूमिका निभाई थी। चिराग और कंगना के अलावा इस फिल्म में कबीर बेदी, पूनम ढिल्लों जैसे कई सितारे नजर आए थे।

कार्तिक आर्यन चोटिल होकर भी देते रहे सीन्स, डेट्स आगे नहीं बढ़ा सकते थे

एक्टर कार्तिक आर्यन की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'चंदू चैंपियन' का ट्रेलर जब से रिलीज हुआ है। एक्टर की खूब तारीफ हो रही है। यह फिल्म स्वर्ण पदक विजेता मुरलीकांत पेटकर की बायोपिक हैं। जिन्होंने 1970 के राष्ट्रमंडल खेलों में और फिर 1972 में जर्मनी में हुए पैरालंपिक में देश का नाम रोशन किया था। इस फिल्म में कार्तिक आर्यन ने मुरलीकांत पेटकर की भूमिका निभाई है। ये फिल्म 14 जून 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। कार्तिक ने बताया कि शोल्डर इंजरी के बाद वो डर गए थे, लेकिन शूटिंग शेड्यूल तय होने की वजह से डेट्स आगे नहीं बढ़ा सकते थे। मैंने शोल्डर इंजरी के बारे में कभी मेंशन किया ही नहीं। मैं तो भूल ही गया था। मेरा दाहिना कंधा पहले से ही किसी वजह से टूटा हुआ था। स्वीमिंग और बॉक्सिंग करने की वजह से वो दोबारा उभर गया। स्वीमिंग मुझे थो?ा जल्दी सीखना था तो उसकी स्पीड थो?ी सी फास्ट कर दी। अचानक एक दिन मेरा दाहिना कंधा जवाब दे दिया। वो बहुत ब?ी इंजरी थी, जिससे मैं बहुत डर गया था कि फिल्म के लिए फिजिक कैसे बना पाऊंगा। उसी समय जिम भी जाना था। बॉक्सिंग भी सीखनी थी। फिल्म की शूटिंग का शेड्यूल ऐसा बना था कि डेट्स आगे नहीं ले जा सकते थे। क्योंकि जिस लोकेशन पर हमें फिल्म शूट करनी थी वो लोकेशन हमें दो साल के बाद मिल रही थी। ऐसे में फिजियोथैरेपी और मसाज से मुझे बहुत मदद मिली। कई तरीके अपनाकर मेरी इंजरी को ठीक करने की कोशिश की जा रही थी। शोल्डर इंजरी के बाद भी एक्सरसाइज, स्वीमिंग और बॉक्सिंग सीखना बंद नहीं किया था। जब उनसे पूछा गया कि क्या मोटिवेशन था, जिसके चलते वो अपनी चोट को नजरअंदाज करके इतनी मेहनत कर पा रहे थे? इस पर कार्तिक ने कहा- मुझे फिल्म की कहानी बहुत पसंद आई थी। मैं हर समय यही सोचता रहता था कि ये कहानी किसी भी तरह हर किसी तक पहुंचनी चाहिए। ताकि लोग जान पाएं कि मुरलीकांत पेटकर ने क्या-क्या किया है। कार्तिक ने कहा- इस कहानी से मैं खुद को भी रिलेट कर पाया हूं।

एयर इंडिया और विस्तारा के विलय का रास्ता हुआ साफ

मेट्रो बाजार

मुंबई, एजेंसी

एयर इंडिया को उम्मीद है कि इस साल के अंत तक विलय पूरा हो जाएगा। राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण (एनसीएलटी) ने एयर इंडिया और विस्तारा के विलय को मंजूरी दी। जिससे इसके दुनिया के सबसे बड़े एयरलाइन समूहों में से एक बनने का रास्ता साफ हो गया है। विलय के बाद सिंगापुर एयरलाइंस की एयर इंडिया में 25.1 फीसदी हिस्सेदारी होगी। विस्तारा सिंगापुर एयरलाइंस और टाटा समूह का एक संयुक्त उद्यम है।
एनसीएलटी की चंडीगढ़ पीठ ने 31 पन्नों के फैसले में टैलेस, एयर इंडिया और विस्तारा से जुड़ी समग्र व्यवस्था योजना को मंजूरी दी। सभी टाटा समूह का हिस्सा हैं। एयर इंडिया को उम्मीद है कि इस साल के अंत तक विलय पूरा हो जाएगा। एनसीएलटी की चंडीगढ़ की दो सदस्यीय पीठ ने कहा कि इस योजना को दोनों एयरलाइन कंपनियों के शेयरधारकों और लेनदारों से पहले ही आवश्यक मंजूरी मिल चुकी है।

एनसीएलटी के आदेश में कहा गया, याचिकाकर्ता कंपनियों और उनके शेयरधारकों के बीच धारा 230 से 232 और कंपनी अधिनियम 2013 के अन्य प्रावधानों के तहत समग्र व्यवस्था योजना को मंजूरी दी जाती है। इसमें कहा गया है कि योजना कंपनियों और उनके संबंधित शेयरधारकों के लिए बाध्यकारी होगी। आदेश में यह भी कहा गया है कि कंपनियां सिंगापुर एयरलाइंस (विस्तारा की शेयरधारक) से प्रत्यक्ष विदेश निवेश (एफडीआई) की मंजूरी और डीजीसीए/एमओसीए से संबंधित सीएआर (नागरिक उड्डयन विनियमन) के तहत आवश्यक सुरक्षा मंजूरी इस आदेश की तारीख से नौ महीने की समय सीमा केभीतर सुनिश्चित करेंगी। इस साल मार्च में सिंगापुर के प्रतिस्पर्धा नियामक सीसीसीएस ने प्रस्तावित विलय को सशर्त मंजूरी दी। सितंबर 2023 में सौदे को कुछ शर्तों के साथ सीसीआई से मंजूरी मिली। टाटा समूह ने जनवरी 2022 में घाटे में चल रही एयर इंडिया की बागडोर संभाली थी।

डिस्काउंट ऑफर की बौछार: घरेलू हवाई यात्रियों की संख्या मई में 5.1 फीसदी बढ़कर 13.89 करोड़

नईदिल्ली, एजेंसी

मानसून के दौरान हवाई यात्रा करने वाले लोगों की संख्या अक्सर घट जाती है। जून से सितंबर तक के डल सीजन को देखते हुए सभी भारतीय एयरलाइंस कंपनियां ग्राहकों को रिझाने के लिए डिस्काउंट ऑफर्स लेकर आई हैं। विमानन कंपनियां फ्लाइट टिकटों पर 70 फीसदी तक डिस्काउंट दे रही हैं। मई के मुकाबले जून में हवाई जहाज यात्रियों की संख्या 6त्न घट गई है, वहीं इस माह घरेलू मार्गों पर फ्लाइट्स की संख्या भी 8 फीसदी बढ़ गई है, क्योंकि देश की सबसे बड़ी विमानन कंपनी इंडिगो ने अपने डेली फ्लाइट्स की संख्या 9त्न बढ़ा दी है। इससे एयरलाइंस पर हवाई किराया घटाने का दबाव है। एयर इंडिया जहां मानसून के दौरान यात्रा के लिए घरेलू और इंटरनेशनल फ्लाइट्स के बिजनेस क्लास के टिकट पर 70त्न तक डिस्काउंट दे रही है। वहीं आकासा एयर 30 सितंबर तक यात्रा वाले सभी फ्लाइट टिकटों पर 20 फीसदी डिस्काउंट दे रहा है। इंडिगो जैसे बड़े खिलाड़ी भी टिकटों पर छूट दे रहे हैं। चुनिंदा रूट्स पर विस्तारा ने इकोनॉमी क्लास का किराया 1999 रुपए से शुरू हो रहा है तो इंडिगो का न्यूनतम किराया 1199 रुपए और एयर इंडिया एक्सप्रेस ने न्यूनतम किराया 1177 रुपए से शुरू किया है। इस बीच रेटिंग एजेंसी इक्रा ने कहा कि मई में हवाई जहाज से यात्रा करने वालों की संख्या 5.1 फीसदी बढ़कर 13.89 करोड़ हो गई। यह कोरोना से पहले के स्तर से 14 फीसदी ज्यादा है। एयर इंडिया- घरेलू उड़ानों के लिए डिस्काउंट वाली फ्लाइट टिकट 2449 रुपए से शुरू। सभी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के बिजनेस क्लास टिकट पर 70 फीसदी तक डिस्काउंट।

आरोपियों की पहचान हुई पर गिरफ्तारी नहीं

आंखों में मिर्च झोंककर 3 लाख 80 हजार रुपए की लूट का मामला

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

खजूरी सड़क थाना क्षेत्र स्थित भोपाल-सीहोर हाइवे पर भारत पेट्रोल पंप के मैनेजर की आंखों में मिर्च झोंककर तीन लाख अस्सी हजार रुपए की लूट करने वाले लुटेरों की पहचान कर ली गई है। पुलिस आरोपियों के हर संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही है, लेकिन अभी तक लुटेरों का सुराग नहीं लग सका। लुटेरों की गिरफ्तारी के लिए खजूरी पुलिस के अलावा, बैरागढ़ पुलिस और क्राइम ब्रांच की कुल चार टीम लगाई गई है, लेकिन किसी भी टीम के हाथ सफलता नहीं लगी।

पुलिस के अनुसार मनोज भावसार (52) कैलाश नगर बैरागढ़ में रहते हैं। वे भोपाल-सीहोर हाइवे स्थित कैम्पियन स्कूल के पास भारत पेट्रोलियम में काम करते हैं। गुरुवार दोपहर करीब सवा दो बजे उन्होंने पेट्रोल की सेल का कलेक्शन का तीन अस्सी हजार रुपए रुपए बैग में रखा और बैंक जाने के लिए निकल गए। उन्हें लालघाटी स्थित बैंक जाना था। पंप से करीब आधा किलोमीटर की दूरी पर मुख्य सड़क पर उन्हें एक युवक ने रुकने के लिए हाथ दिया। उन्होंने बाइक की रफ्तार कम तो युवक ने उनकी बाइक पकड़ ली। चलती बाइक पकड़ने के कारण बाइक अनियंत्रित हो गई। इसी बीच दो अन्य युवक आए और उन्होंने मनोज की आंखों पर मिर्च झोंक दी। इसके बाद गले में लटका बैग छीनकर झाड़ियों की तरफ भाग निकले।

पंप के सीसीटीवी बंद: पुलिस की टीम पेट्रोल पंप पहुंची और सीसीटीवी कैमरे के फुटेज मांगे तो पता चला कि कैमरे गुरुवार सुबह करीब 4 बजे से बंद थे। कैमरों के रखरखाव का काम चल रहा था। बदमाशों ने जिस तरह वारदात को अंजाम दिया है। इससे अनुमान है कि उन्हें पता था कि पंप का कलेक्शन कितने बजे बैंक में जमा होने के लिए जाता है।

चिरायू की तरफ झाड़ियों में भागे थे लुटेरे

लूट में आरोपियों के हाथ बैग लगते ही वह चिरायु अस्पताल के सामने स्थित प्लांटेशन की तरफ झाड़ियों की तरफ भाग निकले। मनोज ने घटना की शिकायत पंप पर मौजूद कर्मचारी और मालिक को दी। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। घटनास्थल पर पहुंचे डीसीपी सुंदरसिंह कनेश ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और नक्शा बनवाया। इसके बाद बदमाशों की धरपकड़ के लिए निर्देश दिए। इसी बीच खजूरी सड़क, बैरागढ़ थाने के बल के साथ क्राइम ब्रांच और सायबर की टीम भी मौके पर पहुंच गई थी।डीसीपी सुंदर सिंह कनेश ने बताया कि गर्मी अधिक होने के कारण सड़क पर कोई नहीं था। हालांकि कुछ लोगों ने बदमाशों को भागते हुए देखा था, जिसके आधार पर पुलिस की पेट्रोलिंग पार्टी को लगाया गया है। पूरे इलाके में सर्चिंग कर बदमाशों की तलाश की जा रही है।

नकबजनों के टारगेट पर कटारा हिल्स के तीन सूने मकानों से लाखों की चोरी

भोपाल, दोपहर मेट्रो।
राजधानी का कटारा हिल्स थाना क्षेत्र इन दिनों नकबजनों के लिए सॉफ्ट टारगेट बना हुआ है। नकबजनों ने संत आशाराम नगर में दिनदाहाड़े दो सूने मकानों को निशाना बनाते हुए लाखों रुपए का माल पार कर दिया। बदमाशों ने एक अन्य वारदात कस्तूरी होम्स में की और यहां रहने वाले दवा कारोबारी के घर से नगदी समेत जेवरात लेकर गए। पुलिस ने सभी वारदातों में नकबजनी का प्रकरण दर्ज कर लिया है।

संत आशाराम नगर में भी दिन दहाड़े दो सूने मकानों के ताले टूटे, सीसीटीवी कैमरे में कैद हुए पल्सर सवार तीन संदिग्ध

पुलिस ने संत आशाराम नगर में हुई वारदात के बाद घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज खंगाले तो पल्सर सवार तीन बदमाश वारदात को अंजाम देते हुए नजर आए। फुटेज में एक आरोपी घर के बाहर खड़ा नजर आया है।

पुलिस के अनुसार संगीता मकोड़े पति कृष्णराव मकोड़े संत आशाराम नगर कटारा हिल्स में रहती हैं। वह लघु उद्योग निगम में नौकरी करती हैं। उन्होंने पुलिस को शिकायत करते हुए बताया कि उनके पति मंडीदीप में नौकरी करते हैं, जबकि बेटा इंजीनियर है और वह भी नौकरी करता है। बेटी लेब टैक्निशियन की पड़ाई कर रही है और वह चेन्नई में है। गत 4 जून की सुबह पति और बेटा नौकरी पर गए थे। वह भी सुबह घर के मुख्य गेट पर ताला लगाकर ड्यूटी चली गई। शाम को घर लौटी तो पता चला कि गेट का ताला टूटा हुआ मिला। बदमाश उनके घर से 54 हजार रुपए की नगदी और जेवरात लेकर गए हैं। बदमाशों ने इसी कॉलोनी में सुरेश शेखर के भी दिन दहाड़े वारदात को अंजाम दिया और उनके घर से कैमरे का डीबीआर चुराकर ले गए।

गौरीशंकर आवासीय परिसर से मीटर के ढक्कन चोरी

इधर, गौरीशंकर कौशल आवासीय परिसर से मीटर रूम से ढक्कन चोरी होने का मामला सामने आया है। अज्ञात बदमाश मीटर रूम में लगे मीटरों से ढक्कन चुराकर उसे कबाड़ियों को बेच रहा है। उक्त मामले में गौरीशंकर आवासीय परिसर के अध्यक्ष धर्मपाल फूसे ने कटारा हिल्स पुलिस को शिकायती आवेदन दिया है। अध्यक्ष धर्मपाल फूसे ने बताया कि मीटर रूम से ढक्कन चोरी होने की जानकारी मिली थी। वे मौके पर पहुंचे और गार्ड की मदद से परिसर में ढक्कनों की तलाश की गई। इस दौरान एक ब्लॉक में कुछ ढक्कन पड़े मिले, बाकि ढक्कनों का पता नहीं है। लिहाजा पुलिस को शिकायत की गई है।

दवा कारोबारी के घर से भी लाखों की चोरी

बदमाशों ने एक अन्य वारदात मकान नंबर ए-42, कस्तूरी होम्स में की। यहां रहने वाले जैन दंपती के घर से बदमाश 70 हजार रुपए की नगदी और जेवरात चुराकर ले गए। पुलिस ने बताया कि आर्निका जैन पति वैभव जैन (36) ए-42, कस्तूरी होम्स में रहती हैं। वह गृहणी है, जबकि उनके पति दवा कारोबारी हैं। गत 4 जून को वह व्यवसाय के काम से टीकमगढ़ गए थे। उन्होंने पत्नी को छत्रसाल नगर स्थित अपने मायके में छोड़ दिया। इसी बीच बदमाशों ने उनके मकान का ताला तोड़कर 70 हजार रुपए की नगदी समेत जेवरात पार कर दिए। घटना की जानकारी जैन दंपती को पड़ोसी ने दी थी। इसके बाद आर्निका जैन ने गुरुवार को अपने घर लौटी और कटारा हिल्स थाने पहुंचकर शिकायत की।

कुख्यात बदमाश से चोरी के 4 दोपहिया वाहन बरामद

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

शाहजहांनाबाद पुलिस ने एक कुख्यात बदमाश को गिरफ्तार कर उसके पास से चोरी के चार दो पहिया वाहन जब्त किए है। जब्त वाहनों की कीमत 3 लाख रुपए बताई जा रही है। आरोपी पर राजधानी के विभिन्न थानों में 16 अपराध दर्ज हैं। जिनमें से 9 अपराध चोरी के हैं। पुलिस के अनुसार शंकर पवार (37) रेलवे क्वार्टर के सामने बैरागढ़ में रहते हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि ताजुल मस्जिद स्थित काला दरवाजा के पास अपनी बाइक खड़ी की थी, जिसे कोई चोरी कर ले गया है। पुलिस ने इस मामले में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ वाहन चोरी का प्रकरण कर आरोपी की तलाश की। इसी बीच सूचना मिली कि बड़ा बाग कब्रिस्तान के पास मौजूद एक व्यक्ति सस्ते दामों पर बाइक बेचने की फिराक में घूम रहा है। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने घेराबंदी कर संदेही युवक को दबोच लिया। पूछताछ करने पर उसने अपना नाम हसीन कुरैशी (37) निवासी कांग्रेस नगर थाना टीला जमालपुरा बताया। पूछताछ करने पर आरोपी ने हनुमानगंज स्थित बेलदारपुरा से एक्टिवा वाहन, कम्युनिटी शादी हाल पुतलीघर टीला जमालपुरा से सुजुकी एक्सेस और आईवरी अपार्टमेंट थाना कोहेफिजा एक पल्सर बाइक चोरी करना स्वीकारा। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर चारों दोपहिया वाहन बरामद कर लिए हैं।

युवती का अपहरण कर युवक ने किया दुष्कर्म

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

बैरसिया थाना क्षेत्र में युवती का अपहरण और बैतूल ले जाकर उससे दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ दुष्कर्म करने और जाति से अपमानित करने का मामला दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार इलाके में रहने वाली 22 साल की युवती गत वर्ष फरवरी महीने में घर से बगैर बताए लापता हो गई थी। परिजन ने उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई थी। शुक्रवार को युवती थाने पहुंची और बताया कि करीब एक साल पहले उसकी पहचान होटल में काम करने वाले रंजीत साहू से हुई थी। रंजीत उसे बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया और भोपाल तथा बैतूल में रखा और शादी का प्रलोभन देकर उसका दैहिक शोषण कर रहा था। गत दिनों वह गर्भवती हुई तो उसने शादी के लिए दबाव बनाया। इस पर रंजीत ने शादी करने से इंकार कर दिया और जातिसूचक शब्दों से अपमानित किया। युवती किसी तरह उसके चंगुल से छूटकर अपने घर पहुंची और घटना की जानकारी दी। पुलिस ने आरोपी रंजीत के खिलाफ अपहरण कर शारीरिक शोषण करने और एससीएसटी एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है।

महिला गांजा तस्कर से तीन किलो डेढ़ सौ ग्राम गांजा जब्त

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

हबीबगंज पुलिस ने एक महिला तस्कर से 3 किलो 150 ग्राम गांजा बरामद किया है। जब्त किए गए गांजा की कीमत 30 हजार रुपए बताई गई है। पुलिस ने आरोपी महिला के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर उसे जेल भेज दिया है। पुलिस ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली थी कि श्याम नगर पानी की टंकी के पास ब्लॉक नंबर 4 के सामने गली में दीपा बाई नाम की महिला गांजा बेच रही है। मुखबिर के बताए हुलिए के आधार पर एक महिला बैठी मिली, जिसके दाहिने हाथ में एक सफेद रंग प्लास्टिक की थैला था। उसने अपना नाम दीपा बाई (58) पति स्व. भीकम धुर्वे बताया। प्लास्टिक का थैले की तलाशी ली जिसमें 3 किलो 150 ग्राम मादक पदार्थ गांजा रखा मिला। आरोपी महिला दीपा गांजा जब्त कर उसके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की कार्रवाई की गई।

बलात्कार के झूठे केस में फंसाने की धमकी देकर अफसर से दो करोड़ की ब्लैकमेलिंग

अड़ीबाजी करने वाली महिला को पुलिस ने किया गिरफ्तार

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

हबीबगंज थाना क्षेत्र स्थित ई-टू शिवाजी नगर में एक अफसर से दो करोड़ की अड़ीबाजी का मामला सामने आया है। अड़ीबाजी करने वाली महिला को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस की पूछताछ में पता चला कि महिला खुद को रीवा की वरिष्ठ पत्रकार और समाजसेवी बता रही है। पुलिस उसका रिकॉर्ड खंगाल रही है।

पुलिस के अनुसार 44 साल के डॉक्टर जीवन रजक, ई-2, शिवाजी नगर में रहते हैं और वह पीएचई में पदस्थ बताए जाते हैं। इधर, रीवा निवासी नेहा त्रिपाठी, खुद को वरिष्ठ पत्रकार और समाज सेवी बता रही है। डॉक्टर रजक ने

बताया कि नेहा त्रिपाठी से उनकी एक साल पहले वर्ष 2023, में मुलाकात हुईड़थी। नेहा त्रिपाठी, की नेता मंत्रियों और अफसरों से अच्छी जान पहचान है और वह नेता मंत्रियों से मिलने रीवा से भोपाल आती थी। इसी दौरान उसकी पहचान ओएसडी रजक से हो गई। पहचान होने के कारण उसका रजक के घर और दफ्तर आना जाना था। इसी का फायदा उठाकर नेहा उन्हें ब्लेकमेल करने लगी। बलात्कार के झूठे केस में फंसाने की धमकी देकर आरोपी उनसे अब तक कई बार रुपए मांग चुकी है, लेकिन उसकी डिमांड इस बार दो करोड़ रुपए की थी। लिहाजा ओएसडी ने पुलिस को शिकायत की थी। पुलिस ने आरोपी नेहा त्रिपाठी को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार डॉक्टर जीवन रजक राज्य प्रसाशनिक सेवा के अधिकारी हैं। वे पूर्व जलसंसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट के ओएसडी रह चुके हैं।

ट्रेन में महिला यात्री के बैग से जेवरात चोरी

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

प्रतापगढ़ एक्सप्रेस में रायबरेली से भोपाल की यात्रा कर रही एक महिला के बैग की चेन खोलकर बदमाशों ने हजारों रुपए कीमत के जेवरात चोरी कर लिए। घटना का पता भोपाल रेलवे स्टेशन पर ट्रेन से उतरने के बाद चला। जीआरपी ने अज्ञात चोरों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जीआरपी के अनुसार इंदौर में रहने वाली सुमन पाल परिवार के साथ प्रतापगढ़ एक्सप्रेस में रायबरेली से भोपाल की यात्रा कर रही थी। भोपाल में ट्रेन से उतरने के बाद देखा कि उनके बैग की चेन खुली हुई है। वहीं अंदर स्टील के डिब्बे के अंदर रखे जेवरात नहीं थे। रास्ते में किसी ने डिब्बा खोलकर सोने का हार, चांदी की पायल, कमर पेटी, कान की झुमकी, चांदी के कड़े, बिछिया, सोने की नथनी समेत करीब डेड़ लाख रुपए के जेवरात चोरी कर लिए।

लेडिस पर्स चोरी: चालीस गांव महाराष्ट्र निवासी निर्मला गिरी का भोपाल रेलवे स्टेशन स्थित नई बिल्डिंग के पास लेडीज पर्स चोरी चला गया. चोरी गए पर्स में 5 हजार रुपए नकद और 15 हजार रुपए का मोबाइल समेत अन्य सामान रखा हुआ था। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश के सोनभद्र में रहने वाले नीतीश कुमार भोपाल इंदौर पैसेंजर में सवार होकर उज्जैन जा रहे थे। भोपाल स्टेशन निकलने के बाद ट्रेन जैसे ही डी-केबिन निशातपुरा के पास पहुंची, वैसे ही अज्ञात व्यक्ति उनका मोबाइल फोन चोरी कर भाग गया। चोरी गए मोबाइल की कीमत बीस हजार रुपए बताई गई है।

मेट्रो एंकर | पुलिस ने दर्ज किया मामला, एक आरोपी को किया गिरफ्तार

प्रॉपर्टी के विवाद में ब्रोकर का कार से अपहरण, कमरे में बंधक बनाकर मारपीट के बाद छोड़ा

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

एमपी नगर थाना क्षेत्र स्थित पुराना आरटीओ के पास से कार सवार चार अपहणकर्ताओं ने प्रॉपर्टी डीलर का अपहरण कर लिया। आरोपी उसे सुलतानपुर लेकर पहुंचे और वहां मारपीट करने के बाद औबेदुल्लागंज के पास लाकर छोड़कर फरार हो गए। पुलिस ने प्रॉपर्टी ब्रोकर की शिकायत पर आरोपियों के खिलाफ रास्ता रोकने, अपहरण, मारपीट, बंधक बनाने समेत अड़ीबाजी का मामला दर्ज किया है। पुलिस एक आरोपी को गिरफ्तार कर चुकी है, बाकि आरोपियों की तलाश की जा रही है।

एसआई लवेश कुमार ने बताया कि 39 साल के नजीब खान, इंद्रप्रस्थ कॉलोनी में रहते हैं और प्रॉपर्टी ब्रोकर हैं। उन्होंने पुलिस को शिकायत करते हुए बताया कि गुरुवार शाम वह पुराना आरटीओ के पास एमपी नगर में था, तभी गगन उर्फ सतीश

समेत अरोरा, प्रीत सरदार और सोनू सरदार कार लेकर पहुंचे थे। उन्होंने नजीब को रोक लिया और गालीगलौज करते हुए मारपीट करने लगे। इसके बाद कार में जबरन बिठा लिया। आरोपियों ने नजीब से कहा कि अपने घर कॉल कर और कह दे कि मैं प्रॉपर्टी के काम से बाहर आया हूं।

सुलतानपुर ले जाकर बंधक बनाया

गुरुवार शाम आरोपी उसे अपने साथ लेकर सुलतानपुर पहुंचे थे। वहां एक कमरे में बंधक बनाकर रखा और उससे मारपीट की। रात भर बंधक बनाकर मारपीट करने के बाद आरोपियों ने उसे औबेदुल् लागंज लाकर छोड़ दिया। वह किसी तरह भोपाल पहुंचा और पुलिस को शिकायत की। पुलिस को उसने बताया कि आरोपियों ने उसने प्रॉपर्टी दिलाई थी। प्रॉपर्टी में कुछ पैमेंट देने का बाकि है। लिहाजा प्रॉपर्टी बेचने वाला रजिस्ट्री नहीं कर रहा है। इसी के चलते आरोपियों ने उस पर जबरन रजिस्ट्री कराने का दबाव बनाते हुए उसका अपहरण कर लिया था। पुलिस ने उक्त मामले में गगन उर्फ सतीश, अरोरा, प्रीत सरदार और सोनू सरदार के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस ने गगन उर्फसतीश को गिरफ्तार कर लिया है।

छेड़छाड़ के मामले में फरार आरोपी गिरफ्तार

भोपाल, दोपहर मेट्रो।

टीटी नगर पुलिस ने छेड़छाड़ के मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी पांच महीने से फरार था। उसकी गिरफ्तारी पर एक हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया था। पुलिस के अनुसार फरवरी महीने में एक महिला ने रिंकू उर्फ चंडी नामक युवक के खिलाफ छेड़छाड़ की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने आरोपी की तलाश शुरू की, लेकिन वह गायब हो चुका था। काफी तलाश करने के बाद भी जब आरोपी नहीं मिला तो अधिकारियों ने गिरफ्तारी पर इनाम की घोषणा की। शुक्रवार को पुलिस ने आरोपी रीतेश वर्मा उर्फ रिंकू उर्फ चांडी निवासी बाणगंगा को गिरफ्तार कर लिया है।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक **राजेश सिरोठिया** द्वारा पी जी इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड,करोंद-भानपुर बाइपास विलेज रसलाखेड़ी भोपाल से मुद्रित तथा ए-182 मनीषा मार्केट शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। **प्रधान संपादक राजेश सिरोठिया संपादक आशीष दुबे*** आर एन आई पंजीयन क्रमांक एमपी एचआईएन/2016/68849 (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार) **फोन :** 0755-4917524, 2972022